वर्ष पाँचवां] श्रीरामतीर्थ ग्रन्थावली [खंड तीसरा

श्री

स्वामी रामतीर्थ

उनके सदुपदेश—भाग २७।

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग।

लखनऊ।

प्रथम संस्करण } [illegible] १९२४
का हि००० } सं. १९८१

बाद
हमारे
यदि
हो कि

फुटकर

जिल्द ॥=) सजिल्द ।||=)

निवेदन ।

इस वार श्री आर,एस,नारायण स्वामीजी, जो ग्रन्थावली के अनुवाद के अध्यक्ष हैं दो मास तक बाहर पर्वतों में भ्रमण करते रहें, और जिस प्रैस में ग्रन्थावली छपती है वह अपने पुराने स्थान को छोड़ कर नवीन स्थान में आने के कारण कई दिन तक बन्द रहा, इस लिये दो मास के स्थान पर चार मास में यह २७ वां भाग प्रकाशित हो सका। पर अब अच्छा प्रवन्ध किया जा रहा है जिस से आशा पड़ती है कि शेष तीन भाग तीन मास के भीतर २ प्रकाशित हो जायँगे।

यह २७ वां भाग एक प्रकार से स्वामी राम के लेखों वा व्याख्यानों का अन्तिम भाग है, क्योंकि अब कोई व्याख्यान या लेख स्वामी जी का हमारे पास छपना बाकी नहीं रहा। केवल अंग्रेज़ी पुस्तक हार्ट आफ राम (Heart of Rama रामहृदय) जिस में स्वामी जी के उपदेशों से चुने हुए तत्त्वरूप वाक्य नव अध्यायों में विभक्त प्रकाशित हैं, उन का हिन्दी अनुवाद छपना बाकी रहा है। इस के छपने के बाद कोई स्वामी जी का ऐसा लेख वा व्याख्यान अब हमारे पास नहीं है कि जो ग्रन्थावली में नहीं आ चुका। यदि किसी रामप्यारे के पास कोई ऐसा लेख या व्याख्यान हो कि जो ग्रन्थावली में न आया हो तो उसके भेजने की

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
पाप की समस्या	१
भारतवर्ष के संबंध में तथ्य और आंकड़े	१४
पत्र मंजूषा	२०
कविता	६४



PRINTED BY K. C. BANERJEE AT THE ANGLO-ORIENTAL
PRESS, LUCKNOW.





स्वामी रामतीर्थ।



पाप की समस्या।



२८ दिसम्बर १९०२ को दिया हुआ व्याख्यान।



वेदान्त की शिक्षाओं पर कुछ आपत्तियां राम की दृष्टि में लाई गई हैं। उस दिन किसी मनुष्य ने कहा कि यदि हिन्दुओं का तत्वज्ञान यही हो तो भारत के राजनैतिक पतन का कारण समझना सहज है। दूसरे मनुष्य ने राम से पूछा, यदि हिन्दुओं की शिक्षायें, वेदान्त, अर्थात् यह तत्वज्ञान, यह धर्म दुनिया का सर्वोत्कृष्ट धर्म और तत्वज्ञान होते, तो भारतवर्ष इतना अन्धकार ग्रस्त और ईसाई देश इतने समृद्ध क्यों होते?

राम इस समय इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देगा, क्योंकि यदि ये प्रश्न उठा लिये जायंगे तो निश्चित विषय को त्याग

अनुसन्धान होना चाहिये, अन्यथा कठिनता हल नहीं होसकती। यही सुख मनुष्यों को गुलाम बनाता है। ट्रोजन रण (Trojan war) इसका दृष्टान्त है। यह है जो एक लड़की को वीर बना देता है और दूसरी को नहीं। यह कहना गलत है कि यह सुख स्वयं नारी से आता है। हमें इसमें की भूल को समझ लेना चाहिये। उस में या उसके शरीर में कोई सुख नहीं है।

यदि सर्व सुख प्रियवस्तु (वा प्रेम पात्र) में न केन्द्रित हों, तो क्या स्त्री और पुरुष सदा एक दूसरे के लिये सुख का स्रोत बने रहते? हम जानते हैं कि यह सत्य नहीं है। जब आप-अपना सुख भोग चुकते हो, तो उसके बाद आप किस दशा में होते हो? और सुख की चतना फिर नहीं रहती। जब तुम नपुंसक होते हो, तब क्या वह (नारी सुख का स्रोत होती है? जब तुम्हारी अर्द्धांगी रोगी होती है, जब वह व्यभिचारिणी होती है, जब तुम बीमार होते हो, तब उसमें कोई सुख नहीं रहता। यहां तुम दो पृथक सत्ताएँ पाते हो—द्वैत। जब ये अनुपस्थिति होती हैं तो केवल शरीर ही की पूर्ण एकता नहीं होती किन्तु मन और आत्मा की भी होती है। फिर एक ऐसी अवस्था आती है जिसका वर्णन नहीं हो सकता। तब देह देह नहीं है, संसार संसार नहीं है, एकता, स्वर्ग, स्वाधीनता, अभयता—क्योंकि द्वैत नहीं है—अभिन्नता, अद्वैतता विराजती है। दुनिया और देह के विनाश का बिलकुल नाश हो गया! द्वैत-भ्रम का अब अस्तित्व नहीं रहा। न मैं देह हूं और न वह (नारी) देह है; हम दोनों शरीर, मन, दुनिया से ऊपर हैं। बैकुण्ठ फिर प्राप्त होगया, लक्ष्य पर पहुँच होगई, अब कोई

शीघ्र कृपा करें जिस से रामे के समग्र ग्रन्थों में वह भी शामिल हो सके।

अन्त में ईश्वर का धन्यवाद है कि लीग अपनी धीमी
वा अविश्रान्त गति से इस अतिविशाल कार्य को करने में
सफल हुई है, और जिन महानुभावों ने अपनी उदारता और
राम प्रेम से प्रेरित होकर इस महान कार्य में तन, मन वा पृष्ठ
धन से सहायता दी है उन के लिये तो मेरा रोम २ धन्य- १
वाद दे रहा है। आशा है वे प्यारे इसी प्रकार अपनी १५
सहायता का लाभ लीग को पहुँचाते रहेंगे जिस से लीग २०
अपने उद्देश्यों में भली भान्ति सफल होती रहे। ॐ
६५

मंत्री

वारिक क्लेश होते हैं। तभी स्वार्थों की मुटभेड़ होती है, और विवाह वाली रुकावटें तब उत्पन्न होती हैं। वेदान्त को समझो और मुक्त हो। और नाम मात्र ग्रन्थिओं के अतिरिक्त और कोई ग्रन्थि नहीं है। हरेक स्वाधीन होने के लिये है। अपने बच्चों को पूर्णतया स्वाधीन होने दो। उस से मनुष्य कभी नहीं बिगड़ता। संपूर्ण संसार एक स्वर्ग है, और परमेश्वर को कभी धोखा नहीं दिया जा सकेगा।

ॐ! ॐ!! ॐ!!!

पाऊंड हो गया है। भारत में यूरोपीय अफसरों की तनखाह, जिनका यथार्थ में सब ऊंची नौकरियों पर पूर्णाधिकार है, एक करोड़ पाउंड पड़ती है।

भारत की निल्लोह (खर्च बाद देकर नकद=net income) की आधी रकम, जो अब ४ करोड़ ४० लाख पाउंड है, हर साल भारत के बाहर बह जाती है।

[ऊपर के तथ्य, इंग्लैंड में प्रकाशित एक पुस्तक, सर रोमेश दत्त सी. आई. ई० कृत 'वृटिश भारत का आर्थिक इतिहास (The Economic History of British India) के आधार पर दिये गये हैं।]

१६०१ में भारत में विधवाओं की संख्या ५४३१६३६० थी। बंगाला प्रान्त में २६५६२२ बालिका विधवाएं हैं।

ॐ! ॐ!! ॐ!!!



SWAMI RAMA TIRTHA, M. A.

First Photo as Sannyasin, taken at Agra in February, 1902.

व्यवहारतः आन्तरिक साम्यता पर, जो हरेक वस्तु पर शासन करती है, विश्वास न करना।

७. लोगों के शब्दों, या बाह्य आचरण से नतीजों पर फुदक जाना और रूहानी क़ानून में विश्वास पूर्वक पूर्णतया संतुष्ट न रहना।

८. लोगों से वार्तालाप में (निज स्वरूप से) बहुत दूर भटक जाना।

ये बातें हैं जो लोगों के मन में असंतोष उत्पन्न करती हैं। इस लिये क्लेश के इन आठ स्रोतों (कारणों) से आप दूर रहियेगा। ॐ !

तुम्हारा अपना प्रिय स्वरूप
रामस्वामी के रूप में

॥ श्रीः ॥

मुजफ्फर नगर,
१८ अक्टूबर १६०५।

प्रियतम, महानुभाव,

हाथों में मली हुई राख खाल को साफ (स्वच्छ) कर देती है।

इस प्रकार, शारीरिक रोग तीन बार धन्य हैं, जब वे अपने साथ देहाध्यास रूपी मल को उड़ा देते हैं।

अरे, रोग और पीड़ा का स्वागत करो !

जब तक एक निर्जीव शव घर में पड़ा है, तब तक सब प्रकार की महामारियों का बड़ा खटका है। जब मुर्दा हट जाता है, तब स्वस्थता का परम राज्य विराजता है। ठीक इसी तरह जब तक देहाध्यास का पोषण किया जाता है, तब

देना पड़ेगा। किन्तु ये प्रश्न कुछ बाद के व्याख्यानों में उठाये जांयगे और इन के उत्तर इस तरह पर दिये जांयगे कि सब लोग चकित हो जांयगे। जिन लोगों को (राम के) कुछ उपदेश सुनने मिले हैं, राम केवल उनसे अधीर न होने की, तुरन्त नतीजों पर न फुदकने की प्रार्थना करता है। राम चाहता है कि वे तनिक धीरज रक्खें और वक्ता को आद्योपान्त सुन लें।

मुसलमानों की इंजील, अलकोरान में एक वाक्य इस प्रकार है, "असदाचार और दुर्गुण के हवाले (यदि) तुम अपने को कर दो, मद्यपान और विषयभोग में (यदि) तुम अपने जीवनों को लगा दो, तो तुम अपनी सत्यानाशी आप कर रहे हो, तब तुम अपना सत्यानाश आप प्रतिपादन करोगे।" एक मुसलमान सज्जन शराब पीते और इन्द्रियों के सुखों के पीछे दौड़ता हुआ और काम-वासनाओं को भोगता देखा गया था। एक मुसलमान धर्माचार्य उसके पास पहुँचा और उसे फटकारते हुए कहा कि "ऐसा मत कर क्योंकि तू अपने (मुसलमानों के) पैग़म्बर के नियत किये हुए नियमों को भंग कर रहा है।" तब इस शराबी ने अलकोरान के वचन का पहला भाग तुरन्त पढ़ा और कहा "यह देखो। अलकोरान कहता है, 'तुम शराब पियो और आनन्द करो और अपने आप कामाचार के हवाले कर दो। अलकोरान का, हमारे धर्मग्रंथों का, हमारी इंजील का, यह यथार्थ वचन है। अलकोरान, धर्मग्रंथ मदिरापान और काम परायणता की आज्ञा देते हैं। क्यों वे न दें?"

तब तो धर्माचार्य ने कहा, "भाई! रे भाई! तुम क्या करने जा रहे हो? बाद के भाग को भी तो पढ़ो, 'तुम आप

अपना सत्यानाश करोगे' (यह है वचन का दूसरा भाग)। दूसरा भाग भी तो पढ़ो।" शराबी ने जवाब दिया, "पृथ्वी-तल पर एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो सारे अलकोरान पर अमल कर सके। मुझे इस हिस्से पर अमल करने दो। यह आशा या कल्पना नहीं की जा सकती कि कोई मनुष्य इंजील की सब नसीहतों पर अमल कर सकता है। कुछ लोग थोड़े अंश पर अमल कर सकते हैं और कुछ बड़े अंश पर; और बस। उस समग्र अलकुरान पर कोई नहीं अमल करता। फिर आप मुझ से समग्र पर अमल करने की आशा क्यों रखते हैं? मुझे वचन के प्रथम भाग का उपयोग करने दो"।

अतः राम की केवल यही प्रार्थना है कि उस मुसलमान शराबी की तर्क-शैली वा तत्त्वज्ञान का उपयोग नहीं किया जाना चाहिये। पूरा वचन पढ़ना उचित है, तब परिणाम निकाला जाय, उससे पहले नहीं।

एक समय राम के पास एक सोने की घड़ी थी। चैन में लगे हुए छोटे अलंकारों में एक खिलौना-घड़ी थी, जो वास्तव में कुतुबनुमा या परकार था। वह (खिलौना-घड़ी) चलती नहीं थी, किन्तु सुइयों को एक विशेष प्रकार से ठीक करने पर वह एक बजा सकती थी। सदा एक बजा रहता था, द्वैत के लिये कोई स्थान नहीं था। वही एक तुम हो। समय, स्थान और कारणत्व अर्थात् देश, काल, वस्तु से ऊपर खड़े हो। ये सब तुम से शासित होते हैं, तुम उनसे नहीं। वे तुम्हारी कल्पना शक्ति के चाकर हैं—दो और तीन मिथ्या हैं—वह एक तो काल के बंधन से मुक्त है।

प्र०—क्या विवाहित मनुष्य आत्मानुभव की प्राप्ति

का हौसला कर सकता है?

एक सूचना के उत्तर में कि "इस प्रश्न का विचार न किया जाय और इसके बदले में राम के बांधे हुए विषय का अनुसरण किया जाय" राम कहता है कि हरेक विषय राम का है। इसका यदि पूर्ण विवेचन किया जायगा तो आपका बड़ा कल्याण होगा--किन्तु यह विस्मयजनक है, तुम्हें यह पूरा सुनना होगा। इस देश के विचारों को शायद यह विचित्र जान पड़े। राम इसकी परवाह नहीं करता, वह केवल तुम्हारा आदर करता है।

इस प्रश्न के उत्तर में वेदान्त कहता है, "अवश्य ही, औषधि बीमार को दी जाती है, और उसको नहीं कि जो अच्छा भला है"।

जो दुनिया और उसके खतरों में सब से अधिक फँसे हैं, उन्हीं को इसकी सब से अधिक ज़रूरत है। एक अविवाहित मनुष्य के लिये आत्मानुभव उतना सहज नहीं है जितना कि विवाहित और पारिवारिक जीवन को यथार्थ रीति पर निर्वाहकारी मनुष्य के लिये। किन्तु असावधान ढंग से वह अनुभव नहीं कर सकता और उलटा नीचे घसीटा जाता है। पुरुष और स्त्री के सच्चे संबंध के ज्ञान की बेखबरी बड़ी मुसीबत का कारण होती है। इतने महत्वपूर्ण और हृदय के नगीची विषय का निवारण क्यों न किया जाय? इस प्रश्न का एक पहलू (विवाह की तैयारी) इस समय नहीं उठाया जायगा? यह एक बड़ा विषय है और बाद के किसी व्याख्यान में इस पर विचार किया जायगा।

राम के विवाह के बाद उसने और उसकी स्त्री ने दो साल तक ब्रह्मचर्य पालन किया। यह तथ्य है, केवल ज़बानी

जमाखर्च नहीं।

विवाह हानिकारक नहीं है, केवल वह कमज़ोरी (हानिकर) है जो उसमें क़ाबू जमा लेने पाती है; वह वस्तुतः हानिकर है; भय, पदार्थों और रूप में लगन, "मैं देह हूँ, मेरा साथी देह है," इस कल्पना की पुष्टि करना, अधिकार जमाने की लालसा और उस का भाव ग्रहण करना पतनकारी तत्व हैं। यदि वैवाहिक संबंधों के पालन का यही ढंग हो, तो मनुष्य कभी आत्मानुभव नहीं कर सकता।

पिनैलोपी (Penelope) जब बीनती और उधेड़ डालती है, तो उसका काम कभी कैसे समाप्त हो सकता है? वह मनुष्य भला कैसे उन्नति कर सकता है जो सदा उस सब का निराकरण कर देता है कि जो उसने प्राप्त किया था? वेदान्त निर्भयता से कहता है कि तुममें शक्ति का संचार होना चाहिये, तुम्हें उच्चतर प्रेम से परिपूर्ण होना चाहिये, जिसे झूठ ही में प्रेम कहा जाता है, उसकी तुच्छता और नीचता से ऊपर उठना चाहिये--देहाध्यास से ऊपर उठो। यह है बीनने की क्रिया। जब तुम पति या पत्नी में केवल देह देखते हो, तब सब किया धरा चौपट होजाता है। कैसे तुम उन्नति कर सकते हो? क्या इससे यह निकलता है कि लोगों को विवाह नहीं करना चाहिये? नहीं, किन्तु विवाह का उपयोग भिन्न होना चाहिये। वेदान्त के उपदेश को समझो। विवाह को अपने उत्कर्ष का एक साधन बनाओ, तब वह बड़ा सहायक होजाता है। ठोकर लगाने वाला ढेला ज़ीने का वा पार टपने का पत्थर बन जाता है। जब विवाह काम-विकार की गुलामी बनजाता है, तब तुम्हारी हर बार की तुष्टि में गुलामी बढ़ती है, और तुम

अधिकाधिक नीचे ही डूबते जाते हो।

धर्म-प्रवर्तकों (Prophets) के वचन नारी के विरुद्ध हैं। वे कहते हैं कि नारी "नरक का द्वार है।" राम सहमत नहीं है। सड़क पर चलता हुआ एक मनुष्य (शराब की एक बोतल उसकी जेब से बाहर निकली हुई है) एक पुजारी से मिलता है, जेल की राह पूंछता है, उसका परिदर्शन करना चाहता है, जैसा कि राम ने पिछले सप्ताह किया था। पुजारी के हाथ में एक छड़ी है और उससे उसने बोतल छुई। कहा कि "भाई, यह सबसे नज़दीक का रास्ता है, यह तुम्हें अवश्य वहां पहुँचा देगा।" इस प्रकार नारी के सम्बन्ध में कहा जाता है। दुनिया एक जेल है—आधुनिक विवाह अवश्य तुम्हें वहां पहुंचाता है। यदि नर और नारी एक दूसरे के पतन का कारण हैं, तो उसी परमेश्वर ने जिसने इंजील लिखी है मनुष्यों के हृदयों में नारी को ढूँढ़ने की ऐसी इंजील क्यों लिखी? यह तो वचनविरोध है। इस ग्रन्थि में एक गूढ़ अर्थ है। वह अज्ञान है जो इसे नरक का उपाय बनाता है। केवल उसी को दोष देना चाहिये, न कि विवाह के सम्बन्ध को। प्रश्न यह है कि उसे (अज्ञान को) दूर कैसे किया जाय। यह एक शून्य विन्दु है। यदि शून्य दशमलव विन्दु (decimal point) की दाहिनी ओर रक्खा जाता है, तो उसका मूल्य घट जाता है। शून्य खुद कोई मूल्य नहीं रखता, अपने सम्बन्ध और स्थिति से ही वह मूल्यवान बनता है। इसी तरह इस मामले में आप की स्थिति सम्बन्ध का मूल्य स्थिर करती है, अपने आप से नहीं, सिर्फ आप के अपने ढंग से।

मनुष्यको अपनी स्त्री में सुख क्यों मिलता है? इसका

दशा या अवस्था नहीं ! वेदान्त कहता है कि तुम तब अपनी सच्ची आत्मा के लिये शक्ति और परमानन्द होते हो, जो तुम सचमुच हो उसने पूरा मंडल (चक्र) बना लिया है—धन और ऋण की एकता होगई है, पूरी घूमी हुई बिजली-बत्ती की सी रोशनी हो रही है। बिजली का घेरा पूरा हो गया है, ध्रुवे एकत्र होगये हैं--और मामूली या असली हालत फिर होगई है ! आनन्द, निर्भीकता, उत्पादक शक्ति, साक्षात् ईश्वर-अर्थात् असली यथार्थ आत्मा, और तब हम कह सकते हैं, "यह मनुष्य ईश्वर का पुत्र है।" जब पति और पत्नी मूलतत्व में लीन होगये हैं, सब उसमें गल जाते हैं, तब सारी दुनिया विलीन हो जाती है, मानो आत्मा से खा ली जाती है, सब जातियां, वर्ण, और सम्प्रदाय चावल के तुल्य होते हैं, जिसमें मृत्यु मसाला डालने के समान (चटनी) होती है, आत्मा उसे खा लेता है, क्योंकि आत्मा उत्पादक शक्ति है।

दूसरी ओर हम देखते हैं कि, वेदान्त के अनुसार अज्ञानी पुरुष, न जानता हुआ, बाहरी रूप, मिथ्या पदार्थों के प्रेम में फंस जाता है, आत्मा का अनादर करवाता है और केवल बाहरी चिन्हों का विचार किया जाता है।

एक मनुष्य जंगल में एक किताब ज़मीन पर पड़ी देखता है। बिजली चमकती है। वह मूर्खता से समझता है कि बिजली का कारण पुस्तक हुई है, अन्यथा किसी तरह नहीं मानता, ये दोनों चीज़ें उसने एक साथ देखीं और समझता है कि एक दूसरी की कारण है। सो मनुष्य को एकता में आनन्द की प्राप्ति होती है, जिसका कारण वास्तव में नर या नारी नहीं है, किन्तु परमेश्वर की वास्तविकता है, पर

अपने मन में वह उस आनन्द को एक मानषीय पदार्थ का संसर्गी मानता है।

आप इस तथ्य का क्या उपयोग कर सकते हैं? आप को उसी क्षण अनुभव करना चाहिये कि जब मन पदार्थ और विषयभोग से हटा लिया जाता है और केवल आनन्द का विचार करता है जो एक शक्तिरूप, तेज स्वरूप, सच्चा आत्मा है, तब अधम मन में उतरने की कोई ज़रूरत नहीं है, जो ग़ायब हो जाता है,—यह दैवी तत्व वही है जो सूर्य, चन्द्रमा, शक्ति, अनन्त, देश काल वस्तु से परे, एक सागर है, जिसमें सब पदार्थ लहरों, तरंगों, भँवरों के तुल्य हैं,— असली, आधारभूत, मूल तत्व के रूप हैं। तुम्हारे शरीर इन तरंगों और लहरों के समान हैं, भेदभाव का एक मात्र कारण जल है। एक बच्चा नदी की ओर देखता हुआ कहता है, "भाई! देखो, यह एक लहर आ रही है"। यहां जल पहले ही से है, किन्तु प्रधानता व्यापार को दी गई है। "मैं तुम्हें एक लहर दिखाऊँगा, न कि एक नदी। ठीक वही बात यहां भी है, एक निर्वयव परमेश्वर है! सूर्य, चन्द्र, शरीर, और तरंगें "मैं तू" रूपी मानस सागर में उमड़ती हैं। इस तरह मनुष्य अनेकता लाता है, नाम रूपी दृश्य में पधारता है, शरीरों का संघर्ष होता है, तरंग एक दूसरे से टकराती हैं। सुख केवल पदार्थ के संघर्ष के द्वारा नहीं होता, वह तो आत्मा की उपस्थिति है, जो लहरों के टूटने पर स्पष्ट होती है। वेदान्ती बच्चे को सिखाना चाहता है कि सोना क्या है, उसे एक अंगूठी दिखा कर कहता है, "यह सुवर्ण है।" बच्चा कहता है, "क्या गोलाई सोना है?" नहीं। "क्या रंग सोना है?" नहीं। "चिकनाई?" नहीं, नहीं!

एक भावना दी कैसे जा सकती है? सोने की दूसरी वस्तु भी दिखाई जाती है। अन्ततः वह भावना वा कल्पना निकाल ली गई। वह इसका अनुभव करता है। उनके गुणों को यथार्थ रूप से पहचानो और उन्हें जीवन में वर्तो।

बीरबल ने बादशाह से पूछा कि अन्धों की संख्या अधिक है या दृष्टि वालों की। बहस हुई और निश्चय हुआ कि इसे साबित किया जाय। बादशाह समझता था कि अंधे कम हैं। इस लिये प्रमाण के लिये वह एक टुकड़ा कपड़े का लाया, और अपने सिर में लपेट कर उसने पूछा " यह क्या है ? " उत्तर मिला, " पगड़ी।" तब उसने कपड़े को अपने कन्धों पर रखा और लोगों से पूछा, "यह क्या है ?" उत्तर मिला। " शाल ", तीसरी बार उसने कपड़े को धोती की तरह पहरा, और उन्हों ने इसे उसी नाम से पुकारा। " सब अंधे, अंधे ! इन (उक्त नामों) में से यह कुछ भी नहीं है, केवल कपड़ा है, नामों और रूपों से कपड़ा छिपा दिया गया है।"

अनुभव करो कि आत्मा क्या है, सोने को देखने के लिये यह ज़रूरत नहीं है कि आप उसे तोड़ें। जब आप नर, नारी, भँवरों, लहरों कपड़े और सोने का विचार करते हैं, तब आप पीछे की (आधारभूत) वास्तविकता का नहीं विचार करते।

मत कहो कि विवाह धर्म के विरुद्ध है। देखो कि सुखकी वास्तविक दशा क्या है, वास्तविक स्वरूप क्या है। आत्मानुभव के अभिलाषी मनुष्य की हैसियत से, सच्चे आनन्द, वास्तविकता, मूल तत्वों पर विचार करो। जब मनुष्य, पगड़ी, शाल रूपी पहचान की चेतना तुममें न रह जाय, तब ध्यान परायण हो कर बन्धन के कारण को निर्मूल कर दो,

वास्तविकता में डूब जाओ।

ॐ—वह मैं हूँ—इसे सिद्ध करो, "क्या वह मेरी असली प्रकृति है? क्या मैं वह हूँ?" यदि मैं हूँ, तो दुनिया केवल एक तरंग है, मैं क्यों उसके पीछे ललचाऊं? क्यों? क्योंकि देदीप्यमान सूर्य में कोई बिजली की रोशनी चमकती नहीं है। वह केवल अंधेरे ही में चमकती और प्रकाश देती है। धीरे धीरे उज्ज्वल सूर्य-प्रकाश में आओ, इन्द्रियों का सुख दीपक की तरह कोई प्रभा नहीं फैलाता। गाली देना और निन्दा करना अस्वाभाविक है। तुम इसे तभी कुचल सकते हो जब इस से ऊपर उठो। भाई! उपाय का उपयोग करो और उठो।

दुनिया खुद एक अचम्भा है। दूसरे अचम्भों की कोई ज़रूरत नहीं है। सब पापों के कारण से डरो जो केवल आत्मा को जानने से दूर होता है। विशुद्धता का अनुभव करो और विशुद्ध हो जाओ। दूसरे किसी धर्म की शिक्षा देना अस्वाभाविक है।

"Do come or do not come,
You are in me.
Stay near, or stay far, wherever you be;
In me you are, in me you move.
Nay me is thee,
Dissolve in me, and be the blissful sea.
Giver and not seeker—
Partake of my nature and be happy."

"आओ वा न आओ,
तुम मुझ में हो।
दूर रहो, या निकट रहो, जहां कहीं तुम हो,

मुझ में तुम हो, मुझ में तुम्हारी गति है।
नहीं, मैं तू हूँ,
मुझ में घुल जाओ, और आनन्दमय सागर हो जाओ।
दाता हूँ और मांगने वाला नहीं हूँ।
मेरी प्रकृति को भोगो और सुखी हो।"

भारत में तर्क संगत, वैज्ञानिक, और स्वाभाविक विधि यह प्रचलित है कि स्त्री सहायता करती है, पति की बाधक नहीं होती।

आत्मानुभव कर चुकने के बाद दो साल और राम गृहस्थ रहा। अपनी स्त्री से उसने वेदान्त की चर्चा की, और वह फूल, बतियां लाती, और निज-आत्मा में लीन हो जाती थी। वह अब दंडवत प्रणाम करके उपासना करती है, फिर राम की ओर तब तक देखती है जब तक उस (राम) की देह उसके लिये एक (परमात्मा का) चिन्ह नहीं हो जाती, ॐ उच्चारती है, राम में आत्मा के दर्शन करती है और अपने आप में परमेश्वर को देखती है, इन विचारों को बाहिर भेजती है, प्रत्येक आपस में परमेश्वर को देखता है, परस्पर एक दूसरे की सहायता करते हैं, और आत्मानुभव प्राप्त करते हैं। राम ने उसे उठाने में सहायता दी। यह कुछ समय तक होता रहा, फिर उन्होंने महीनों साथ बिताये, अधम विचारों का कोई खयाल उन्हें नहीं आया, काम-विकार जीत लिया गया था। परस्पर एक दूसरे को यथार्थ समझते थे, दोनों मुक्त थे। पति और पत्नी का विचार जाता रहा था, कोई बंधन नहीं था। वह उसे अपना पति नहीं समझती है और न वह उसे अपनी स्त्री समझता है।

विचारों की संकीर्णता, और अधिकारों के कारण पारि-

भारतवर्ष के सम्बन्ध में तथ्य और आंकड़े।

भारतवर्ष का बाह्य रक़बा लगभग बीस लाख वर्ग मील है, अथवा अलास्का, ओरीगन और कैलीफोर्निया छोड़ कर सारे अमेरिका के बराबर है।

आबादी लगभग ३० करोड़ है, अथवा मानव जाति के पञ्चमांश के लगभग। सम्पूर्ण साम्राज्य में, पहाड़, ऊसर और जंगल के सहित प्रति वर्ग मील १६७ की आबादी है, इसके विपरीत अमेरिका में २१·४ है। बंगाल प्रान्त में प्रति वर्ग मील में ५८८ की आबादी है। भारत के कुछ भागों में इतनी बड़ी आबादी है कि दुनिया का कोई भी भाग उतनी (आबादी) नहीं रखता।

भारतवर्ष में हर प्रकार की जलवायु है। उसकी भूमि के एक भाग में दुनिया भर से अधिकतम जलवृष्टि होती है। दूसरे हिस्से में, जो कई लाख वर्गमील का है, एक बूँद भी पानी शायद ही कभी बरसता है।

भारत में ११८ विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं, और इन में से ५६ भाषाओं के बोलने वालों की संख्या एक लाख से अधिक है।

वहां बीस लाख से अधिक ईसाई हैं, जिस में से १० लाख से अधिक रोमन कैथोलिक हैं, ४५३६१२ चर्च आफ इंग्लैंड सम्प्रदाय के हैं, ३२२५८६ कट्टर ग्रीक चर्च के हैं, २२०८६३ बैपटिस्ट हैं, १५५४५५ लुथर-अनुयायी हैं, ५३८२१ प्रेसबाटीरियन हैं, और १५७८४७ फुटकर ईसाई हैं। इन ईसाइयों (२० लाख से कुछ ऊपर) में विदेशियों, बृटिश

सेना, विदेशी धर्म प्रचारक (missionaries) इत्यादि, की आवादी शामिल है। इस तरह देशी ईसाइयों की संख्या अधिक नहीं हैं, और जो भारतवासी ईसाई बनाये गये हैं, वे अत्यन्त नीच जातियों के हैं। उच्च जातियों का बिलकुल स्पर्श नहीं हुआ है। अंग्रेज़ सरकार भारतीय खज़ाने से हर साल पैंतालीस लाख रुपये ईसाई धर्म पर खर्च करती है।

पिछली मर्दुमशुमारी के अनुसार ५४६२२४६६४ एकड़ भूमि पर खेती होती है, जो औसत में आबादी के प्रति मनुष्य के हिस्सेमें लगभग २ एकड़ है। दो करोड़ बीस लाख से अधिक एकड़ भूमि साल में दो फसलें पैदा करती है। १७ कड़ोर ४७ लाख ३५ हज़ार मनुष्य निरानिर खेती करते हैं। २५४६८००० मनुष्य न्यूनाधिक खेती के काम में नौकर हैं। ३६ लाख ४६ हज़ार मनुष्य मवेशी (पशु) पालने में और १ करोड़ ४५ लाख ७६ हज़ार खाद्य और पेय के उत्पादन में लगे हैं। १ करोड़ १२ लाख २० हज़ार मनुष्य घरेलू चाकरी करते हैं। १ कड़ोर २६ लाख ११ हज़ार कपड़ा बनाने, २३६१००० शीशा, बर्तन, और पत्थर की चीज़ें बनाने में लगे हैं, ३२ लाख ८५ हज़ार चमड़े का कारबार करते हैं (ये सब मुसलमान हैं, ४२ लाख ६३ हज़ार, सब मुसलमान, लकड़ी, बेत और चटाई बनाने का काम करते हैं ।) लाखों हिन्दू मर्दुमशुमारी की शब्दावली में "निन्द्य पेशों" में हैं—बिलकुल कुछ करते ही नहीं । उनसे पहले उनके पूर्वजों ने जो कुछ किया, वही यदि वे करने में असमर्थ हैं, तो वे कुछ करेंगे ही नहीं।

भारतमें कुल १४०४६६१३५ नारियोंमें से केवल ५४३४९५ लिख पढ़ सकती हैं—हज़ार में एक से भी कम। २०

करोड़ की कुल आबादी में से अपढ़ों की सारी संख्या २४ करोड़ ६५ लाख ४६ हज़ार १ सौ पछत्तर दर्ज हुई है।

ई० १६०० में ५ करोड़ ४० लाख मनुष्यों पर दुर्भिक्ष का प्रभाव पड़ा था। दरबार के साल में ५० लाख भूखों मर गये। जीवन के लिये संग्राम प्रति वर्ष भयंकर होता जाता है। शीघ्रता से उन्नति करते हुए उद्योग-धंधों, रेलों का व्यूह, तथा दौलत और काम काज के अन्य साधनों के बढ़ने पर भी मजूरी का निर्ख बढ़ने के बदले घटता जाता है।

भारत में २० करोड़ से अधिक आदमी पांच पैसे रोज़ से भी कम पर निर्वाह कर रहे हैं। १० करोड़ से अधिक तीन पैसे रोज से कम पर जी रहे हैं, और ५ करोड़ से अधिक एक पैसे रोज से भी कम पर बसर कर रहे हैं। पूरी आबादी के कम से कम दोतिहाई भाग को अपने जीवन के किसी भी साल में उतना काफी भोजन नहीं मिलता जितना कि मानवशरीर को पोषण के लिये आवश्यक है। देश के अनेक भागों में कुटुम्ब औसत में एक चौथियाई एकड़ भूमि पर बसर करने को लाचार हैं, तथा और लाखों आधे एकड़ भूमि पर।

भारत के रुई के खेतों में जो नारी और नर काम करते हैं उन्हें ५) रुपया महीने से अधिक नहीं मिलता। एक पैसा हजामत बनवाई दिया जाता है। सरकार के नौकर डाकिये, चिट्ठी ले जानेवाले, अधिकसे अधिक केवल १२)रु० मासिक पाते हैं, जो लगभग ३ डौलर के बराबर है। हट्टे कट्टे और होशियार कारीगर, मेमार, बढ़ई, और लोहार ८) या १२) रु० महीने से अधिक नहीं पाते, और मुनीम, गुमाश्ते तथा अन्य लोग, मकान के भीतर के पेशे वाले १६) से

२५) रु० महीने तक पाते हैं। भारत के सब मजूरी कमाने वालों को एक साथ कर लिया जाय तो उनकी माहवारी आमदनी लगभग ठीक उतनी ही है जितनी अमेरिका के उसी दर्जे के लोग एक दिन में पाते हैं।

सारी आबादी का दोतिहाई भाग अपनी समृद्धि के लिये जलवृष्टि के सहारे है, और यह भी कहा जा सकता है कि, अपनी ज़िन्दगी ही के लिये वह जलवृष्टि के सहारे हैं। यदि पानी वहां न बरसे, तो दुर्भिक्ष पड़जाता है। वे काफी नहीं कमा सकते कि दुर्भिक्ष के लिये अन्न जमा कर सकें। अन्न का अभाव नहीं, बल्कि धन का अभाव दुर्भिक्षजन्य व्यथा का कारण है, क्योंकि सामान्यतः जब भारत के एक भाग में दुर्भिक्ष होता है तब भारत के अन्य भागों में यथेष्ट, और कभी कभी यथेष्ट से अधिक, अन्न पैदा होता है।

अंग्रेज़ी सरकार को जो नक़द (पक्की) आमदनी रेल विभाग के एक सप्ताह (२४ मार्च १९०४ के सप्ताह) में हुई, वह ७६ लाख अमेरिकन डालर (लगभग २ करोड़ ५० लाख रुपये) थी। यह निरन्तर बढ़ रही है।

भारत में ९५ सैकड़ा सरकारी नौकर भारतवासी हैं, और सरकारी नौकरों को जो कुल रकम तनखाह में मिलती है उसका केवल २५ सैकड़ा उन्हें (९५ सैकड़ा भारतवासी सरकारी नौकरों को) मिलता है, ६५ सैकड़ा रकम ५ सैकड़ा अंग्रेज़ सरकारी अफसरों की जेब में जाती है।

समस्त विदेशी धर्म प्रचारक समाजों (foreign missionary societies) की आमदनी सन १९०२ ई० में

२०२१८०५७ डालर थी। यह प्रायः भारतवर्ष में खर्ची जाती है।

भारत में वृटिश पूंजीवाद का प्रारम्भ ई० १६०० में भारतवर्ष में ७० हज़ार पौंड की पूंजी से ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना से हुआ है। ई० १८३३ में ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापार बन्द हो गाया। उस तारीख से १८५८ तक कम्पनी केवल भारत का शासन करती रही। १८५८ में, भारतीय ग़दर के बाद, खुद कम्पनी की ही समाप्ति होगई। किन्तु उसकी नीति जीवित है। कंपनी का मूलधन ऋणों से चुकाया गया, जो भारतीय ऋण बनाये गये, जिसका ब्याज भारतीय टेक्सों वा करों से चुकाया जाता है। सम्राट ने ईस्ट इंडियां कपनी से साम्राज्य खरीदा था, किन्तु भारतवासियों ने खरीद का रुपया दिया। भारतीय ऋण, जो १८५७ में ५ करोड़ १० लाख पाउंड था, १८६२ में बढ़ कर ६ करोड़ ७० लाख पाउंड हो गया। तदुपरान्त शान्ति के जो ४० साल बीते हैं, उनमें भारतीय ऋण बराबर बढ़ता ही गया है। १६०१ में वह २० करोड़ पाउंड था, जिस पर भारत के लोगों को हर साल ३० से ४० लाख पाउंड, या डेढ़ करोड़ से २ करोड़ डालर तक, ब्याज का देना पड़ता है। यह एक अरब डालर के ऋण के बराबर की रकम है जिस पर उन्हें (भारतवासियों को) ब्याज देना पड़ता है। दुनिया का कौन देश इस तरह के से भार को सह सकता है? भारतीय राजस्व (मालगुज़ारी, revenue) से जो घर खर्च (Home Charges= सरकार द्वारा विलायत भेजी जाने वाली रकम) इंग्लैंड हर साल भेजा जाता है, वह बढ़कर १ करोड़ ६० लाख

पत्र मञ्जूषा।

पुष्कर,
जिला अजमेर।
२२ फरवरी १९०५।

परम धन्य, प्रिय भगवन्,

जहां राम है वहां का जलवायु कैसा सुन्दर है। प्रत्येक, दिवस नववर्ष-दिवस है, और प्रत्येक रात्रि बड़े दिन (Christmas) की रात्रि है। नीला आकाश मेरा प्याला है और जगमगी रोशनी मेरी मद्य है।

पहाड़ों में मैं हलकी हवा हूँ, नीचे क़स्बों और शहरों में मैं रेंग जाता हूँ—ताज़ा और सब सड़कों में मैं पूर्ण रूप से फैलता हुआ गुज़रता हूँ।

Stay with me, then I pray ;
Dwell with me through the day
And through the night and where it is neither
night nor day,
Dwell quietly. Pass, pass not any more.
Thou canst not pass.
I too am where thou art ;
I hold the fast ;
Not by the yellow sands nor the blue deep,
But in my heart, thy heart of hearts.

मनुष्य को मैं छूता हूँ, और स्त्री को मैं छूता हूँ—ऐसा मेरा लीलामय मनोरञ्जन है।

मैं प्रकाश हूँ, बड़े स्नेह से मैं अपने बच्चों—फूलों और पौधों-को पोषता हूँ। सुन्दरों और बलवानों के नयनों और हृदयों में मैं रहता हूँ।

मेरे साथ ठहरो, तब मैं प्रार्थना करूंगा,
रहो मेरे साथ दिन भर
और रात भर भी, और वहां भी जहां न दिन है और न रात,
चुपके चाप रहो। अब फिर परे न जा, परे न जा।
तुम परे नहीं जा सकते।
मैं भी वहाँ हूँ, जहां तू है;
मैं तुझे मज़बूत पकड़े हूँ,
न तो पीत बालू में और न गंभीर नील में,
किन्तु मेरे हृदय में, तेरा हृदयों का हृदय है।

प्रकाशों के प्रकाश में रहने से रास्ता आपही आप खुल जाता है। ब्योरे का ठीक ठीक व्यापार अनायास होता है (गुलाब की कली की बन्द पंखुरियों की तरह) जब कि भक्ति और दिव्य बुद्धि का सुखकर प्रकाश स्वतंत्रता से चमकता है।

आशा की जाती है कि "थंडरिंग डान" (Thundering Dawn) का जनवरी का अंक आपने मिस्टर पूर्ण सूतरमंडी, लाहौर से पाया होगा।

आपका अपना आप

स्वामी राम तीर्थ।

जनवरी के अंक में आपकी कविता कमलानन्द के नाम से प्रकाशित की गई है, जो कि पूर्ण स्वामी (संन्यासी) नाम है। अब जब तुम और नये लेख भेजोगी, तो वे 'ॐ' के नाम से छापे जाँयगे, यदि आप पसन्द करें।

प्रिय महाभाग गिरजा तथा सब को प्यार, आशीर्वाद, आनन्द, शान्ति।

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

STARS.

From the intense, clear, star-sown vault of heaven.
Over the lit sea's unquiet way,
In the rustling night-air came the voice,
"Would'st thou be as they are ? Live as they,
"Unaffrighted by the silence round them,
"Undistracted by the sights they see.
"These demand not, that the things without them."
Yield them love, amusement, sympathy.
"And with joy the stars perform their shining,
"And the sea its long moon-silvered roll ;
"For self-poised they live, nor pine with noting.
"All the fever of some differing soul.
"Bounded by themselves and unregardful
"In what state God's other work may be
"In their own tasks, all their powers pouring,
These attain the mighty life you see."

नक्षत्र ।

प्रचण्ड, निर्मल, तारों से बोये हुए नभ मंडल से ।
प्रकाशित सागर के अशान्त मार्ग के ऊपर,
रात्रि की झरझराती हवा में आवाज़ आई,
"क्या तू होगा वैसा जैसे वे हैं ? क्या उनकी तरह
तू रहेगा ?

"अपने इर्दगिर्द के मौन से वे निडर हैं,
"जो दृश्य वे देखते हैं, उनसे निराकुल हैं ।
"वे मांगते नहीं हैं, पर उनसे वाहर की वस्तुएँ,
"उनको प्रेम, मनोरंजन, और सहानुभूति अर्पण करती हैं ।
"और आनन्द से तारे अपना चमकने का काम करते हैं,
"और सागर अपना दूर तक चन्द्र से रुपहला लहराने
का काम करता है ;

"क्योंकि वे स्वयं समचित रहते हैं,
"किसी भिन्नमत अन्तःकरण का सम्पूर्ण ताप देख कर
छीजते नहीं हैं ।

"अपने आप से परीमित और
"परमेश्वर के दूसरे काम की हालत से वे परवाह
अपने ही निजी कामों में, अपनी संम्पूर्ण शक्ति ढालते हुए
वे उस महान जीवन को जिसे तुम देखते हो पाते हैं ।"

ॐ ।

लाहौर, (भारत वर्ष)
२५ जुलाई, १६०५.

कल्याण स्वरूप !

राम उत्तरी हिमालय के घने वनों में है और उस का अन्तिम पत्र निम्न लिखित है,जो संक्षेप में राम विषयक सब समाचार दे देगा।

"दिन रात में समाप्त होता है, और रात फिर दिन में बदल जाती है, और यह आप का राम है; कि कुछ करने को जिसे समय नहीं । कार्य-व्यग्र (busy), कुछ नहीं करने में व्यग्र । आंसू बहा करते हैं, इस अत्यन्त बर्साती ज़िले की निरन्तर वर्षा से अच्छा मुकाबला कर रहे हैं । रोमांच होते हैं, आँखें फटी अपने सामने की कोई वस्तु नहीं देखतीं । बातचीत बन्द है, बदनसीबी से काम बन्द हो गया ? नहीं, बहुत ही खुशक़िस्मती से । अरे ! मुझे अकेला छोड़ दो ।

गद्‌गद परमानन्द की यह निरन्तर तरंगमाला । ऐ प्रेम ! इसे चलने दे । ओ ! परम रुचिकर पीड़ा ।

Away with writing !
Off with lecturing !
Out with fame and name !
Honours ! Nonsense.
Disgrace ! meaningless.
'Are these toys the end of life ?
Logic and Science, the poor Bunglers!
Let them see me and have cured their blindness,

In dreams a sacred current flows.
In wakefulness, it grows and grows,
At times, it overflows the banks
Of senses and the mortal frame.
It spreads in all the world and flows.
It inundates in wild repose.
For this, the Sun, he daily rose,
For this the Universe did roll,
All births and deaths for this.
Here comes surging wonder
Undulating Bliss,
Here comes rolling laughter,

Silence.

लिखने से दूर !
व्याख्यानबाज़ी से परे !
कीर्ति और नाम से कोई काम नहीं ।
सम्मान ! वाहियात ।
अपमान ! निरर्थक ।
क्या ये खिलौने जीवन का उद्देश्य हैं ?
तर्क और विज्ञान, विचारे प्रमादी (गड़बड़-कारी) !
उनको मुझे देखने दो और अपना अन्धापन मिटाने दो ।
स्वप्नों में एक पवित्र धारा बहती है,
जागृत अवस्था में वह बढ़ती और बढ़ती है,
कभी-कभी वह
इन्द्रियों और विनाशशील तनुके तटों से उमड़ जाती है।
वह सम्पूर्ण संसार में फैलाती और बहती है ।

उद्दाम (wild) शान्ति में वह प्लावित करती है।
इस के लिये, सूर्य नित्य उदय हुआ,
इस के लिये विश्व ज़रूर लुढ़का,
सब जीवन और मौत इस के लिये।
यहां आता है ज़ोर से कल्लोल करता हुआ विस्मय रूप तरंगित कल्याण।
यह आता है गरजता हास्य रूप मौन।

——:०।०:——

श्रीः

पोर्टलैंड ओर,

श्रीमती ई. सी. कैम्पबेल,
डेनवर, कोलेरेडो।

जब लोग किसी वस्तु पर अपना दिल लगाते हैं, और विघ्न पड़ता है, तब वे व्याकुल और बेचैन होते हैं। प्रतीत होने वाली बुराई के प्रतिरोध करने की प्रवृत्ति, बिना अपवाद के, संक्षोभ और उत्पात का कारण है। इस प्रकार, क्या आप नहीं समझतीं कि हज़रत ईसा का सिर ठिकाने पर था जब उसने कहा था कि "असत् वा पाप का प्रतिरोध न करो", ? अपने आप को शान्त, बिलकुल खुश रक्खो, और अपनी इच्छा की धारा के विरुद्ध जो कुछ प्रतीत हो उसका उल्लासपूर्वक स्वागत करो। जब हम अपने चित्त की स्थिरता नहीं नष्ट होने देते और स्वरूप (आत्मा) में केन्द्रित रहते हैं, तब, राम ने सदा अपने निजी अनुभव से देखा है, कि प्रतीत होने वाली बुराई भलाईमें बदल जाती है। क्या तुम्हें याद नहीं है कि एक प्रतीत होने वाली बुराई के बाद वह दश रुपये किस प्रकार एक हिन्दू विद्यार्थी को

भेजे गये थे? किन्तु बदमिज़ाजी और बेचैनी से सब कल्याणों, उत्कृष्ट विचारों और हमारी राह देखनेवाली खुश नसीबियों का द्वार हम अपने लिये बन्द कर लेते हैं। सब बुराई और कठिनाइयों को उस चित्त से जीतो जो देह और सांसारिक जीवन को अपने हाथ की हथेली पर लिये हुए हो; दूसरे शब्दों में, प्रेम पूर्ण चित्त को अर्पण करके, (जिससे बढ़कर कोई उच्चतर शक्ति नहीं है) आप उस दोष को जीतो। ॐ!

तुम्हारा अपना प्रियात्मा
राम स्वामी के रूप में

पोर्टलैंड ओर।

श्रीमती ई० सी० कैम्पबेल,
डेनवर, कोलोरेडो।

आप निरन्तर राम से याद की जाती हो।
ॐ! ॐ!! ॐ!!!

आप अति सच्ची, पवित्र, श्रेष्ठ, एकाग्रचित्त, श्रद्धालु, और बड़ी ही भली हो! क्या ऐसी नहीं हो?

(1) To compare or contrast one person with another in the mind,
(2 To compare oneself with any body else mentally,
(3) To compare the present with the past and brood over the memory of past mistakes,
(4) To dwell upon future plans and fear any thing,

(5) To set our heart on any thing but the one Supreme Reality,

(6) To depend on outward appearances and not to practically believe in the inner Harmony that rules over every thing,

(7) To jump up to the conclusions from the *words*, or seeming conduct of people and not to rest thoroughly satisfied with faith in the Spiritual Law,

(8) To be led astray too far in conversation with the people.

It is this that breeds discontent in people's mind, Therefore shun these eight sources of trouble. Om !

१. मन में एक मनुष्य की दूसरे से तुलना या मिलान करना।

२. मनसे अपने आप की किसी दूसरे मनुष्य से तुलना करना।

३. वर्तमान का भूत से मिलान करना और पिछली भूलों की याद में रंज करना।

४. भावी तरक्कीयों के मनसूबे करना और प्रत्येक बात से डरना।

५. एक परम तत्त्व वस्तु के सिवाय किसी और वस्तु में चित्त लगाना।

६. बाहरी रूपों (दिखलावों) पर आश्रय करना और

तक हम दुनिया के सब रोगों को निमंत्रित करते हैं। देह और उस के भावों को भस्म कर दो और तुरन्त हम अद्वितीय बादशाहत भोगने लगते हैं।

HURRAH ! HURRAH !
No jealouy, no fear ;
I'm the dearest of the dear.
No sin. no sorrow ;
No past no morrow.

जय ! जय !
कोई डाह नहीं, कोई भय नहीं ;
मैं प्रियों में प्रियतम हूँ।
कोई पाप नहीं, कोई रंज नहीं ;
न अतीत, न (आगामी) कल्ह है।

The learned mahatmas with hair-splitting heads and prominent bellies,
The spectacled Professors, astonishing the innocent students in the laboratory or the observatory
The bare-headed orators striking dumb their audience from their pulpits or platforms,
Even the poor rich full of complaints of one kind or another—

All these I am.
The heavens and stars,
Worlds, near and far,

Are hung and strung
On the tunes I sung;
No rival, no foe;
No injury, no woe!
No, nothing could harm me.
No, nothing alarm me.
The Soul of all,
The nectar-fall,
The Sweetest Self,
Yea! health itself.
The prattling streams,
The happiest dreams,
All myrrh and balm,
Rawan and Rama,
So pure, so calm,
Am I, am I,

बाल की खाल निकालने के मस्तिष्क और निकले (फूले) हुए पेट वाले विद्वान महात्मा,

प्रयोगशाला या वेधशाला में सरल विद्यार्थियों को चकित करने वाले चश्मेधारी अध्यापक (Professers),

अपनी वेदियों या आसनों से अपने श्रोता-समुदायों को मूक बना देने वाले नंगेसिर व्याख्यान दाता,

एक या दूसरी प्रकार की शिकायतों से परिपूर्ण दीन अमीर भी :—

वे सब मैं हूँ।
आकाश और तारे,

निकट और दूर लोक,
मेरे गाये स्वरों पर;
लटके और बंधे हैं,
न कोई प्रतिद्वन्द्वी, न शत्रु !
न चोट, न क्लेश !
नहीं, कोई वस्तु मुझे हानि नहीं पहुँचा सकती।
नहीं, मुझे कोई नहीं डराता।
सब का आत्मा,
अमृत-स्राव,
मधुरतम आत्मा,
हां, खुद तन्दरुस्ती।
झक्की नदियां,
रुचिरतम स्वप्न,
सब गन्धरस और सुगन्धित प्रलेप,
रावन और राम,
अति पवित्र, अति शान्त,
मैं हूँ, मैं हूँ।

राम।

——:०:——

ॐ !

हर्ष ! आशीर्वाद ! शान्ति ! प्रेम !

३० अगस्त १९०५।

परम कल्याण स्वरूप प्रियतम,

तीन महीने तक राम एक पहाड़ की चोटी पर था (लगभग ८००० फुट), जो संसार के सर्वोच्च पहाड़, मौंट

एवरेस्ट (Mt. Everest) शिखर के सामने है। परसों नीचे मैदान को उतरूँगा। पाँच पुस्तकें यहां लिखी गई हैं, और बीस पढ़ी गई हैं।

राम का मन हर्ष और शान्ति से लबालब भरा है।
संसार मानो मन से बिलकुल ग़ायब हो गया है।

God, God alone
Everywhere !
Within, without
Far and near !
O joy !
Thrilling peace !
Undulating Bliss !
What a heaven!

परमेश्वर, परमेश्वर केवल
सर्वत्र !
भीतर, बाहर
दूर और नगीच !
अरे आनन्द !
सनसनाती शान्ति !
लहराता कल्याण !
कैसा स्वर्ग है !
शान्ति ! कल्याण ! प्रेम !
आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक स्वस्थता,
और जो कुछ कल्याण रूप है, वह सब
गिरजा, ओम्, चम्पा, और दूसरों को जो तुम्हें प्यारे हैं,
प्राप्त हो।

Peace immortal falls as rain drops,
Nectar is dropping in musical rain.
Drizzle ! Drizzle ! Drizzle !

My clouds of glory, they march so gaily !
The worlds as diamonds drop from them,
Drizzle ! Drizzle ! Drizzle !

My breezes of Law blow rhythmical rhythmical
Lo ! Nations fall like petals, leaves.
Drizzle ! Drizzle ! Drizzle. !
My balmy breath, the breeze of Law,
Blows beautiful ! beautiful !

Some objects swing and sway like twigs,
And others like the dewdrops fall.
Drizzle ! Drizzle ! Drizzle !

My graceful light, a sea of white,
An ocean of milk, it undulates.
It ripples softly, softly, softly ;
And then it beats out worlds of spray !
I shower forth the stars as spray.
Drizzle ! Drizzle ! Drizzle !

RAMA.

Om ! Om ! Om !

अमर शान्ति झरती है जैसे पानी बरसता है।
संगीतमय वृष्टि में अमृतवर्षा हो रही है।
वाह मंद २ वृष्टि ! वाह मंद २ वृष्टि !! वाह मंद २ वृष्टि !!

मेरी महिमा के मेघ, वे बड़ी प्रफुल्लता से कूच करते हैं!
उनसे हीरों के से संसार बरसते हैं।
वाह मंद २ वृष्टि, वाह मंद २ वृष्टि ! वाह मंद २ वृष्टि !

मेरे क़ानून के झकोरे तालबद्ध चलते हैं, तालबद्ध।
देखो ! राष्ट्रों का पतन पंखुरियों, पत्तियों के समान होता है।
वाह शीकर वृष्टि ! वा शीकर वृष्टि ! वाह शीकर वृष्टि !

मेरी सुगंधित सांस, क़ानून की मृदुपवन हुई,
कैसी सुन्दर ! सुन्दर चलती है !
कुछ पदार्थ झूलते हैं और डालियों की तरह डोलते हैं
और दूसरे ओस के कणों के समान झरते हैं।
वाह मन्द २ वृष्टि ! वाह मन्द २ वृष्टि ! वाह मन्द २ वृष्टि !

मेरा मनोरम प्रकाश, श्वेत का एक सागर,
दूध का एक सागर, वह लहराता है।
उसमें कोमलता से, कोमलता से, अति कोमलता से तरंगे उठती हैं
और फिर वह फेन के संसार बिछा देता है !
मैं नक्षत्रों को फेनके रूप में बरसाता हूँ !
वाह मंद २ वृष्टि ! वाह मंद २ वृष्टि ! वाह मंद २ वृष्टि !

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

---

* ॐ *

पुष्कर, ज़िला अजमेर,
(भारतवर्ष)।

आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !
शान्ति ! कल्याण ! प्रेम !
आनन्द !

परम प्रिय और परम कल्याण स्वरूप,

एक शान्त, स्वच्छ, और गहरी गहरी झील के तट पर राम रहता है। एक ओर एक लम्बी, समाकार, अविच्छिन्न पहाड़ी फैली हुई है, जो सब कहीं सुन्दर हरा दुशाला ओढ़े हुए है। आम-कुञ्ज यहां बहुतायत से हैं। जिस मकान में राम रहता है उस में दो छोटी फुलवगियां हैं। अति सुन्दर मोरों के झुंड अपने धातुमय गलों से शोर मचाये रहते हैं। बत्तखें खेल खेल कर झील में तैर और गोते लगा रही हैं। नारायण स्वामी (सुन्दर युवापुरुष जिसकी चर्चा शायद रामने तुमसे की हो) यहां राम के लेखों आदि की नक़ल करके राम की सहायता कर रहा है।

झील का नाम पृथिवी-नेत्र है। जंगलदार पहाड़ियां और चोटियां झील की लटकती भौंहें (भवें) हैं। यह वह दर्पण है जिसे कोई पत्थर दरका नहीं सकता, जिसका पारा कभी न छूटेगा, जिस दर्पण में उसे भेंट की जाने वाली सारी मलीनता डूब जाती है, जिसे सूर्य की धुंधली झाड़ू बुहारती और साफ करती है—उसका यह प्रकाश ही झाड़न-कपड़ा है।

यह झील अत्यन्त गौरवोंमें से एकहै, कि जिनको राम मिला है।किस खूबी से यह अपनी विशुद्धता क़ायम रखती है!

इस की सम्पूर्ण तरंगों के बाद इस में एक भी झुरीं नहीं पड़ी है। यह सदा जवान बनी रहती है।

हमारे हृदय ऐसे ही हों।

ॐ ! ॐ !

गर्मी में राम शीतल हिमालय पर चढ़ जाता है।

The western sky doth seem to glow
So beautiful bright ;
Is it the Sun that makes it so ?
Surely it is thy light.

पश्चिमी आकाश चमकता जान पड़ता है
इतना सुन्दर चमकीला;
क्या सूर्य उसे ऐसा बनाता है ?
अवश्य ही यह तेरा प्रकाश है;

Here do—
Birds hang and swing, green robed and red,
Or droop in curved lines dreamily,
Rainbows reversed from tree to tree ;
Or sing low hanging overhead,
Sing soft as if they sing and sleep,
Sing low like some distant waterfall,
And take no note of us at all.

यहां अवश्य हैं :—
हरी पोशाक वाली और लाल,
चिड़ियां लटकतीं और झूलतीं,

या मानों ऊँघते हुए वंक-रेखा में झूमती हैं,
इन्द्रधनुष पेड़ से पेड़ तक औंधे हुए हैं,
या धीमी आवाज़ से नीचे मूँड किये लटकती गाती हैं,
ऐसी कोमलता से गाती हैं, मानो वे गाती और सोती हैं,
धीमे से दूर के जलप्रपात के समान गाती हैं,
और हमारा कुछ भी खयाल नहीं करतीं।

"थंडरिंग डान" (अखबार का नाम) फिर निकाला गया है। चार नये अंक अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। जनवरी का अंक लगभग सारा राम की कलम का लिखा है। कमला की कुछ कविताएं भी कमलानन्द के नाम से निकाली गई हैं।

भारतवर्ष में कमला का एक भी पत्र नहीं मिला।

शान्ति, कल्याण, प्रेम तुम्हे प्राप्त हो

तुम्हारा निजात्मा

स्वामी राम।

प्यारे नन्हे ओम् को

हर्ष, हर्ष, हर्ष और गिरजा को प्यार।

तुम्हें तैयार रहना चाहिए ठीक समय पर राम के पास आने को। समय आने पर राम लिखेगा।

ॐ।

शास्ता स्प्रिंग।

२२ जुलाई १९०३,

प्रिय कल्याणिनी चम्पा (फ्लोरा flora),

शायद इस तरह सम्बोधित होना तुम्हें पसन्द न होगा। किन्तु तुम्हें यह भावे या न भावे, राम की रुचि तुम्हें इसी नाम से पुकारने की है। पूर्व भारतीय (हिन्दु) की भाषा

में हर नाम का विशेष महत्व है, और चम्पा नाम (साधारणतया श्रेष्ठ और उच्च कुलों की लड़कियों का यह नाम रक्खा जाता है) का शाब्दिक अर्थ है, मधुर सुगन्ध वाली पूर्ण विकसित सफेद मालती (पुष्प) ।

यह चिट्ठी लिखने को जब कलम हाथ में ली गई थी, ठीक तब स्वभावतः और अनायास यह नाम राम के ध्यान में आ गया । अंग्रेज़ी में इस का अक्षर-विन्यास इस तरह हो सकता है-Champa या Chumpa ।

उस दिन तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर में एक लम्बा खत कमला (पौलिन Pauline) को लिखाया गया था । क्या तुम्हें उस की चिट्ठी मिली ? उस में राम की अभी की कुछ काव्य-कृतियां भी थीं ।

Vedantic Directions.

1 Vedantic Religion may be summed up in the single commandment—

"keep yourself perfectly happy and at rest, no matter what happens—sickness, death, hunger, columny, or anything.

Be cheerful and at peace on the ground of your Godhead to which thou shalt ever be true."

2 The world - its inmates, relations, and all are vanishing quantities if you please to assert the majesty of your real Self.

Inspect, observe, and watch or do anything; but do all that in the light of your True Self, that is to say, forget not that your Self is above all that and beyond all want.

You really require nothing. Why should you feel a desire for anything ? Do your work with the grace of a Universal Ruler, for pleasure, fun, or mere amusement's sake. Never, never feel that you want anything.

3 When you live these principles of Vedanta, spontaneously will the sweet aroma of Truth proceed in all directions from you.

Before falling asleep—when the eyes begin to close—every night or noon make a firm resolve in your mind to find yourself an embodiment of Vedantic Truth on waking up.

When you wake up, before doing anything else, just bring to your mind vividly the determination dwelt upon before falling asleep.

Whenever you can, just chant or hum to yourself Om."

वेदान्तिक निर्देश।

१, वेदान्त-धर्म एक अकेले सूत्र (आदेश-वाक्य) में संगृहीत किया जा सकता है—

अपने को बिलकुल खुश और निश्चिन्त रक्खो, कोई परवाह नहीं, कुछ भी हो-रोग, मौत, भूख, निन्दा, या कुछ भी हो।

अपनी परमेश्वरता के आधार पर, जिस के प्रति तुम्हें सदा सच्चे बने रहना चाहिये, खुश और शान्ति में रहो।

२. संसार, उस के निवासी, सम्बन्धी, तथा सब कुछ नाशशील पदार्थ हैं, यदि आप अपने वास्तविक स्वरूप की महिमा के दृढ़ निरूपण की कृपा करें।

जाँचिये, देखिये, और ताकिये या कुछ भी कीजिये, किन्तु यह सब कुछ अपने सच्चे आत्मा के प्रकाश में कीजिये, कहने का तात्पर्य यह कि यह न भूलिये कि आप का आत्मा उन सब से ऊपर और सब अपेक्षाओं से परे है।

वास्तव में तुम्हें किसी भी वस्तु की ज़रूरत नहीं है। तुम्हें किसी वस्तु की भी इच्छा क्यों हो? सम्पूर्ण विश्व के शासक के प्रसाद से, सुख के लिये, खेल या केवल मनोरंजन के लिये अपना काम करो। कदापि, कदापि न समझो कि तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है।

३. जब वेदान्त के इन सिद्धान्तों पर तुम अमल करोगे, तब सत्य की मधुर गंध तुम से निकल कर फैलेगी।

सोने के पहले, जब आँखें बन्द होने लगें, तुम हरेक रात या दोपहर को अपने मन में दृढ़ निश्चय करो कि जागने पर अपने आप को वेदान्तिक सत्य की साक्षात मूर्ति पाओगे।

जागने पर दूसरा कोई काम करने से पहले सोने के पूर्व तुम ने जो प्रतिज्ञा की थी, उसे पूरे ज़ोर से अपने मन में लाओ।

जब कभी तुम से बन पड़े, ॐ उच्चारो या अपने मन में ॐ जपो।

इस तरह से यथार्थ असली चम्पा की भाँति तुम मनोरम सुगंध और मनोहर प्रताप अपने चारों ओर हर समय फैलाती रहोगी।

Loud outcries and wounds which once would hurt and smart,
Now sound so sweet—like hymns of praise or music's balmy art,
O thief, o slanderer, robber dear !
Look sharp, come, welcome, quick, O don't you fear,
My self is thine, thine is mine,
Yes, if you don't dont,
Please take away these things you think are mine.

Yes, if you think it fit,
Kill this body at one blow,
Or slay it bit by bit,
Take off the body and all you may,
Be off with name and fame, away !
Take off, away !
Yet if you look just turning round,
'T is I alone am safe and sound.
Good day ! O dear, good day,

ज़ोर का विलाप और घाव जो पहले कष्ट
और पीड़ा देता था,
अब ऐसे मधुर जान पड़ते हैं—जैसे स्तुतियां
या पीड़ाहर नाद-कौशल के स्तोत्र।

ऐ चोर, ऐ निन्दक, डाकू प्यारे!
जल्दी करो, आओ, तुझे स्वागत, शीघ्र करो, अरे तुम
मत डरो।
मेरा-आत्मा तेरा है, और तेरा आत्मा मेरा है,
हां, यदि आप को क्लेश न हो,
तो कृपया इन चीज़ों को ले जाइये जिन्हें आप
मेरी समझते हैं।

हां, यदि आप यह ठीक समझते हैं,
तो एक ही वार से इस शरीर को मार डालिये,
या टुकड़े टुकड़े कर के इसे क़त्ल कीजिये,
देह ले जाइये और सब कुछ जो ले जा सको, लेजाइये,
दूर हो, नाम और कीर्ति लेकर दूर हो!
ले जाओ, दूर हो!

तथापि यदि पीछे घूम कर तुम तनिक देखो,
तो केवल मैं सुरक्षित और व्याधि रहित रहता हूँ।
नमस्कार! ऐ प्रिय, नमस्कार!

तुम्हारा आत्मा
राम स्वामी के रूप में।

स्वामी राम की भेजी हुई टिप्पणियां।

वेदान्तिक साम्यवाद घटाने का सच्चा उपाय, दौलत या दीनता की बिना परवाह किए, हमारा 'अब' और 'यहां' का भोगना है, यहाँ तक भोगना कि अमीर हमारे सामने अपनी गरीबी को अनुभव करें और अपने अधिकार जमाने के भाव से ऊपर उठें। आज कल्ह के साम्यवादी सबसे बड़ी भूल यह करते हैं कि नाम मात्र के अमीरों के अधिकार में जो समुद्र फेन (के समान धन) है उस की एक बूँद के लिये, उन के भार पर करुणा करने के बदले वे डाह करते हैं।

जिन का चित्त सुख भोग सकता है, वे नक्षत्रों से प्रदीप्त उज्वल आकाश में चमकते हुए हीरों का सुखभोग कर सकते हैं, मुसक्याते हुए वनों और नाचती हुई नदियों से बहुत सुख प्राप्त कर सकते हैं, शीतल पवन से, सूर्यप्रभा और चन्द्रिका से, जिनको प्रकृति ने बे रोकटोक हरेक और सब की सेवा के लिये नियुक्त कर दिया है अनन्त आनन्द लूट सकते हैं।

जिनका विश्वास है कि "हमारा सुख विशेष अवस्थाओं पर अवलम्बित है, वे सुख के दिन को अपने से सदा परे हटते और अगिया-वैताल की भांति निरन्तर भागते पावेंगे। जिसे दुनिया की दौलत कहा जाता है, वह सुख की साधन होने के बदले सम्पूर्ण प्रकृति की महिमा और सुगन्धि को— आकाश मंडल और अबाधित दृश्य को छिपाने के लिये केवल बनावटी पर्दे का काम देता है।

कोई कृत्रिम संगीत ऐसा नहीं है जो मनुष्य की भाव-

नाओं के प्राकृतिक बहाव की—वह चाहे मौन अश्रुओं के रूप में हो, या एकान्त हास्य के, अथवा अकेले कविता में डबडबाने के रूप में हो—कभी भी बराबरी कर सकता है।

सब कृत्रिम संगीत और विशेषतः फोनोग्राफ का संगीत बार बार सुना जाने से अन्त में कानों में खटकने लगता है, और आत्मा (चित्त) को स्थूल लोक में उतार लाता है।

पत्थरों और कंकरों (pebbles) के समान विभाग पर हम क्यों झगड़ें ?

दौलत नामक रोग के संपूर्ण अधिकार का दावा करके यदि अमीर कहलाने वाले लोग अपने को बेवकूफ बनाना चाहते हैं, तो कमला का इस में क्या बिगड़ता है। उन्हें अपने को मूर्ख बनाने की खुली छुट्टी कमला को दे देनी चाहिये।

हिमालय की एकान्तता।

(अभी कुछ साल तक जारी रहेगी)

रुपहली शान्ति का सागर फैलाता हुआ चन्द्रमा चमक रहा है। राम के पयाल के बिस्तर पर पूरी चाँदनी पड़ रही है। असाधारण रूप से लम्बी गुलाब की झाड़ियों की, जो इस पहाड़ पर बेखटके निर्विघ्न उगती हैं, परछाहियां चाँदनी से प्रदीप्त बिछौने पर चारखाना बना रही हैं, और ऐसे खिलंदड़ेपन से लहरा रही हैं मानों वे शान्त चाँदनी के, जो बड़ी स्थिरता से राम के सामने सो रही है, अति सुन्दर छोटे स्वप्न हैं।

सोजा, बच्चे, सोजा।
और गुलाबी स्वप्नों से मन्द मन्द हँस।

सुन्दर, पवित्र तुषारपुंज (glaciers) इतने पास पास स्थित हैं कि मानों उन तक हाथ पहुँच सकता है। वास्तव में, अति दीप्तिमान हीरकवर्णी चोटियों का एक अर्द्धचन्द्र (semi-circle) जड़ाऊ मुकुट की भाँति इस आश्रम की शोभा बढ़ा रहा है। सब श्वेत बरफीली चोटियां चाँदनी के क्षीरसागर में स्नान कर रही हैं, और शीतल पवन के झकोरों के रूप में उन की गम्भीर सोहम् रूपी श्वांसें यहां निरन्तर पहुँच रही हैं।

इस पहाड़ पर जितनी बरफ गिरी थी सब पिघल गई है, और चोटी पर का विराट खुला मैदान जहां राम रहता है वह अब नीले, लाल, पीले, और सफेद फूलों से बिलकुल ढक गया है, जिन में से कुछ बहुत ही सुगंधित हैं। लोग यहां आने से डरते हैं क्योंकि वे इस स्थान को परियों का बाग मानते हैं। प्रकृति की सुन्दरता को नष्ट करने वाले देव-निन्दक उन के नित्य के आवागमन से यह स्थान इस कल्पना के कारण बचा रहता है। राम इस पुष्प-भूमि पर बड़ी कोमलता, बड़ी सावधानी से चलता है, ताकि प्रकृति का कोई कोमल, विहँसता हुआ छोटा बच्चा (पुष्प) राम की साधारण कठोर चाल से चोटैल (पीडित) न हो जाय। कोयलें, बत्तकें, और अन्य अनेक पंखदार गवैये सबेरे (प्रातः उठते ही) राम का सत्कार करते हैं। गंभीर ध्यान, वेदों के अध्ययन और धर्म तथा तत्वज्ञान पर लेख लिखने में राम का सम्पूर्ण समय इस ऊँचे एकान्त में बीत जाता है। आठ मील के भीतर २ कोई गाँव नहीं है। पहाड़ी के उतार पर, एक मील की दूरी में एक सेवक राम का भोजन बनाने को रहता है। अनेक महीनों तक राम ने

न तो कुछ लिखा और न किसी प्रकारके पत्रों के उत्तर दिये। सब पत्रव्यवहार त्याग दिया।

के (कमला) और ओ (ओम्) को भारतवर्ष के लिये जल्दी न करना चाहिये।

यथासमय सुन्दरता से हरेक बात निकल आवेगी, विना हमारी किसी प्रकार की बेसब्री के। परमेश्वर की, तरह तनिक परमेश्वर में रहो तो।

Not the body, not the mind.
No relations, no connections,
Constitute your Self.
Nothnig but God is,
Nothing but God is your Self.

न देह, न मन,
न नातेदार, न संबंधी,
अपने आतमा का प्रतिपादन करो।
ईश्वर के सिवाय और कुछ नहीं है,
आपका आतमा ईश्वर के सिवाय कुछ नहीं है।

अति कल्याण स्वरूप गिरजा और चम्पा को शान्ति, कल्याण, आनन्द पहुँचे।

राम के एक प्रिय कल्याणरूप मित्र द्वारा अनुवादित अष्टावक्र गीता इसके साथ ही पृथक पैकिट में भेजी जाती है।

परिच्छिन्नात्मा या व्यक्तित्व की हैसियत से कुछ न होने दो।
हमें इस तरह रहना चाहिये जैसे देह इत्यादि का मानो कभी अस्तित्व ही नहीं था।

एक प्राचीन वैदिक गीत (मंत्र) का आंशिक अनुवाद नीचे दिया जाता है, मूल में एक हिन्दू महिला ने इस की रचना की थी।

....

४ जो कोई देखता है, या सांस लेता है, अथवा जो कुछ कहा जाता है, उसे सुनता है, भोजन करता है, वह सब मेरे द्वारा (करता है), पर वे इसे जानते नहीं हैं, किन्तु मेरे अधीन हैं। सब एक बार सुनो, यह ठीक ऐसा ही है।

८ सब संसारों पर अधिकार जमाता हुआः मैं चलता हूँ जैसे हवा चलती है; भूमि से परे, आकाश से परे हूँ; मैं सम्पूर्ण शक्ति हूँ।

५ मैं कानून हूँ जो अनिवार्य है, मैं सत्य हूँ जो निर्दयी (निष्ठुर) है। मैं प्रकृति के लिये धनुष झुकाता हूँ ताकि इसका बाण उन लोगों को मार गिरावे जो परमेश्वरीय जीवन नहीं बिताते।

स्वर्ग पर मेरी हुकूमत है, इस शक्ति-शाली पृथिवी पर मैं फैला हूँ।

मानव जाती की प्रार्थनाएँ शाम के समय वन से घर को लौटते हुए चौपायों की तरह बंबाती हुई मेरे पास पहुँचती हैं।

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

पूर्ण के न म ।मसिज़ वैलमैन का पत्र सहित उन सब पत्रों के जो राम से समय २ पर पूर्णानन्द जी को प्राप्त हुए।

प्रिय और अत्यन्त धन्यवान पूर्ण,

ओह, तुम्हारे पत्र ने आनन्द की सनसनी मुझमें पैदा

करदी। ऐसा मालूम पड़ा, अथवा यह सत्य था कि हमारे राम की पवित्र चेतना इस चिट्ठी और मेरी आत्मा में व्याप्त थी। निस्सन्देह यह अब सत्य है, क्योंकि उसके पत्रों में से एक में मुझे सूचित किया गया था "माता, राम सदा तुम्हारे साथ है," और आत्मा के लिये कोई हदवन्दी नहीं है। ऐसा ही मैं विश्वास करती हूँ। हां, निश्चय रखती हूँ कि राम *पूर्ण के साथ है। आज का दिन कैसा पवित्र और शान्तिमय रहा है जो तुम्हारे पत्र में महान् चेतना को ला रहा है। इस पत्र के साथ साथ तुम निवेदन करते हो, कि मैं उन पत्रों के संग्रह को, जो राम ने मुझे भेजे थे, भेजूँ। उनकी कहावतों और कृतियों की भी कुछ याददाश्तें (भेज दूँ)। हम में से सब से शुद्र के लिये भी सदा प्रेमपूर्ण रखने वाला भावात्मक ध्यान। यह महान् प्रवुद्ध आत्मा बच्चे की सी सौम्यता से हमारे मनों और हृदयों को हमारे परमेश्वर, अपनी दैवी आत्मा से मिलाने को ऊपर उठा ले गया। अरे, आधुनिक ऋषि राम के द्वारा आविर्भूत होने वाली उस महान चेतना की मधुरता और कोमलता की बलिहारी! परमेश्वर हमारे साथ था, पर हम में से कुछ यह नहीं जानते थे, और अब भी परमात्मा हमारे साथ है, और जैसा कि कल्याणात्मा राम ने प्रायः कहा था, "मृत्यु है ही नहीं," 'वह' (परमात्मा) उन से दूर नहीं जिनके नेत्र देखने को और कान सुनने को हैं। १९०२ साल का ठीक आरम्भ था, जब मैं पहले पहल इस महात्मा से मिली थी। वह सैन-फ्रांसिस्को में व्याख्यान दे रहा था। मैं वे मन उस का व्याख्यान सुनने गई थी। किन्तु उस के ॐ उच्चारण से मेरा मन ऊपर को उठ गया, मेरी हस्ती ऐसी खुशी से

* सरदार पूर्णसिंह से मुराद है।

फड़क उठी जैसी कि पहले कभी मैं ने अनुभव नहीं की थी। स्वर्गीय, कल्याणकारी शान्ति ने मुझे जगमगा दिया।

और जीवन की रोटी जो वह बड़ी स्वच्छंदता से देता था पुष्टि पाने को मैं दूसरा अवसर कभी नहीं चूकी, अर्थात् प्राणाहार रूपी व्याख्यान को सुननेसे फिर मैं न चूकी। इसने अमेरिकनों से यह भी अपील की कि भारत वर्ष जाकर मेरे देशवासियों के परिवारों में बिलकुल उन्हीं के से होकर रहो और उन की सहायता करो। अनेक लोगों ने जाने का वचन दिया। किन्तु गया उन में से एक भी नहीं। एक दिन मैं ने राम से कहा, "स्वामी! आपने मेरे लिये जो कुछ किया है, उस के बदले में मैं आप के जाति भाइयों के लिये क्या कर सकती हूँ?" उन्हों ने कहा, "अगर तुम चाहो तो बहुत कुछ कर सकती हो, किन्तु भारत वर्ष को जाओ।" मैंने उत्तर दिया, "मैं जाऊँगी।" किन्तु मित्रों ने मुझे रोका और उपहास तक किया। कुछ ने कहा कि जाने का विचार करना मेरा पागलपन है, विशेषतः चूंकि मेरे पास लौटने को काफी रुपया नहीं था, किन्तु राम ने कहा, "यदि तुम वस्तुतः वेदान्त जानती होती तो तुम कभी न डरती, क्योंकि भारत वर्ष में तुम वैसा ही परमेश्वर पाओगी जैसा अमेरिका में।" वैसे ही प्राणों के दिव्य चैतन्य स्वरूप परमेश्वर ने, मेरे प्यारे हिन्दू भाइयों और बहनों, हां, मेरे बच्चों की प्रेममयी, और कोमल उत्कंठा के द्वारा, अपनी सर्वपालक शक्ति प्रमाणित कर दी। फिर भी पांच महीने बीत जाने पर, अपने कल्याण स्वरूप राम से किये हुए अपने वादे को मैं पूरा कर सकी और उस के स्वदेश के लिये मैंने प्रस्थान कर दिया। अकेली! उस सुदूर देश में मैं एक भी मनुष्य को नहीं जानती थी, तथापि राम की शिक्षा के अनुसार पूर्ण

विश्वासके साथ "अनन्त की पालक भुजा का सहारा" था। मेरी अन्तिम भेंट राम से शास्ता स्प्रिंग्स, कैलिफोर्निया में हुई थी। सैन-फ्रांसिस्को के लिये मेरी गाड़ी छुटने के पूर्व केवल चन्द घंटे मैं वहां ठहरी थी। मैं उस पहाड़ पर का वह दिन कभी भूल नहीं सकती, हिमाच्छादित शास्ताशृङ्ग मीनार की तरह हमारे सिरों पर दंडायमान थी। ढाई वर्ष बाद, जब मैं अमेरिका लौटने वाली थी, इस महात्मा से मिलने के लिये कई दिन तक हिमालय का सफर करके मैं व्यास मुनि के स्थान गई। मन को हिला देने वाले उस अन्तिम अभिवादन का वर्णन करना या लिखना असम्भव है। और अन्तिम, कुछ ही महीनों बाद इस महापुरुष ने शरीर त्याग किया।

भारत वर्ष के लिये रवाना होनेके पूर्व मुझे कल्याण स्वरूप राम की, जो कुछ दिनों तक शास्ता में रह थे, कई चिठ्ठियां मिली थीं। वे लिखते हैं :—

शास्ता स्प्रिंग्स, कैलीफोर्निया,
८ अक्तूबर, १९०२।

अत्यन्त कल्याण स्वरूप दिव्य माता,

राम आप की हरेक प्रगति की पूरी क़द्र करता है। राम इतना स्वार्थी नहीं है कि और का और समझे, न इस की कोई सम्भावना है कि राम कभी उसे भूल जाय जो अपने भारत के, सत्य के, और पीड़ित मानव जाति के प्रेम में राम रूप हो गई थी। सूर्य का अर्थ है 'सन' (अंग्रेज़ी शब्द सूर्य का पर्यायवाची)। (उस ने मेरा नाम सूर्यानन्द रक्खा था और वैसा ही राम कहता है।) "असत् का

प्रतिरोध न करो" इस का अर्थ निष्क्रिय नास्तित्व हो जाना नहीं है। नहीं, बिलकुल नहीं। इस वचन का शरीर के कार्यों से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। इस आदेश का सम्पर्क मन से, और केवल मन से है। यह वाक्य मन की शान्ति का उपदेश देता है। मानसिक प्रतिरोध, विरोध और विप्लव "सँवारने के" बदले सदा विषमता, व्यग्रता और खीझ पैदा करते हैं, और फलतः तुम्हें अस्थिर करके प्रतीत होने वाली बुराई को प्रेम से (बलिदान, या दानशील प्रकृति से) जिससे बढ़कर कोई उच्चतर शक्ति नहीं है, जीतते हैं।

"बुराई का प्रतिरोध न करो" और घटनाओं का स्वागत एक दाता की सी प्रसन्नता से करो। महान् आत्माएँ अपनी सभ्यता कभी नहीं नष्ट होने देतीं। अपनी शान्ति क़ायम रखने से हम बाधक ढेलों वा रोड़ों को सदा सीढ़ी के पत्थरों (ओटों) में बदल सकते हैं। निराशा की भावना को तुम्हें कदापि, कदापि अपने मन में न आने देना चाहिये।

ठीक, इसी समय राम को विचार आया था कि "भारतवर्ष पहुँचने पर मुझे अपने सुभीते के अनुसार तुरन्त प्यारे पूरन का पता दर्याफ्त करना चाहिये"। वह पंजाब में कहीं होगा। "थंडरिंग डान" का सम्पादक" वही है। उसके लिये परिचायक पत्रों (introductory letters) की ज़रूरत नहीं है।

आशा है कि एक स्थान (सीट) ठीक कर लेने के बाद तुम तुरन्त राम को पत्र लिखोगी।

तुम्हारा अपनाही विशुद्ध वीर आत्मा

राम स्वामी के रूप में।

यह चिट्ठी (राम से) मुझे तब लिखी गई थी जबकि अपनी खिंतत भारतीय यात्रा के संबंध में मेरे मन पर बड़ा भार था, क्योंकि मेरे आने का बड़ा विरोध हो रहा था।

ॐ ! ॐ !! ॐ !!

शास्ता स्प्रिंग्स, केलीफ़ोर्निया,
१० अक्तूबर, १६०३,

प्यारी माता,

लिखने के कागज़ और लिफाफों सहित तुम्हारा प्यारा पत्र मिला। मैंने उसे एक पेटी कागज़ और लिफाफे भेजे। जब तुम उस सहानुभूतिशील भूमि (भारत) पर क़दम रक्खोगी, तब तुम्हारा हार्दिक स्वागत किया जायगा। राम भारत को लिख चुका है। यदि तुम वहां जाओगी तो अपने नाम को अपने आपसे आगे दौड़ते देखोगी। जहां कहीं तुम टिकना चाहोगी, वहीं तुम्हारा स्वागत होगा। (एक प्रश्न के उत्तर में वह कहता है)। जब हम अपने आपको ओछेपन, तुच्छता और हास-विलास के हवाले कर देते हैं, तब प्रकृति के एक अदृश्य कानून से हमें उस की प्रतिक्रिया से ऐसा दुःख भोगना पड़ता है कि जो हमें नीचे दबा देता है। बुद्धिमान मनुष्य सदा अपने मन को स्वस्थ रखता है और एक मात्र परम तत्त्व में लगाये रहता है।

जहां तक सांसारिक बातों का संबंध है, वह अति उदार राजकीय दाता की सी तटस्थ, उदासीन, निष्काम और धैर्ययुक्त वृत्ति से उन में लगता है।

यह श्रेष्ठ भाव समस्त क्रियाशील कार्यों में क़ायम रक्खा जाता है। और निष्क्रिय अनुभवों के संबंध में, मुक्त-आत्मा उन सब को अप्रभावित, अविचलित भाव से और बड़ी हंसी खुशी से भोगता है, अथवा हर समय अपने इस स्वाभाविक प्रताप को स्पष्ट रूपसे याद रखता है :। "मैं अकेला हूँ, अद्वितीय हूँ, सूर्य मेरी मूर्त्ति (चिन्ह) है। अपने आपके वास्तविक सूर्य-चरित्र को निरन्तर मनन करने से और जीवन के नित्य के मामलों में उसके प्रयोग से आप का व्यक्तिगत आत्मा प्रेम, प्रकाश, और प्राण की उच्चतम विभूति होजाता है। आशा है कि जहाज़ पर चढ़ने या जहाज़ चलने के पहले तुम राम को लिखोगी। जब आप हांगकांग और जापान पहुँचोगी तब भी आप को लिखना चाहिये। भारत में तुम्हारे लिये कुछ (सुभीता) करने में राम को बड़ी खुशी होगी।

तुम्हारा श्रेष्ठ, प्रेमी आत्मा
राम के रूप में।

ॐ! ॐ!! ॐ!!!

शास्ता स्प्रिंग्स, कैलीफोर्निया,
१६ अक्तूबर, १६०२,

अत्यन्त धन्य और श्रेष्ठ सूर्य्यानन्द,

तुम्हारी दोनों चिट्ठियां आज दोपहर को एक साथ ही राम के हाथ में आईं। सब ठीक और सन्तोषजनक है। चूंकि तुम लम्बा सफर करने वाली हो, इस लिये यदि मानवप्रकृति का तुम्हारा ज्ञान कुछ और बढ़ जाय, तथा पूर्ण रूप से स्थिरचित्त, शान्त और सदा अपने घर में रहने की महत्ता तुम्हारे हृदय पर अमिट रूप से अंकित हो जाय,

तो तुम्हारा उपकार हो सकता है। (एक मामले में देर थी जिससे मुझे बड़ी बेचैनी थी)। सब बाह्य विलम्बों और विरोधों का अभीष्ट तुम्हारी आन्तरिक शक्ति और पवित्रता को बढ़ाना है। प्रकृतिवादियों ने निर्विवाद रीति पर सिद्ध कर दिया है कि विरोध और युद्ध वा कलह के विना किसी तरह का विकास या उन्नति असम्भव है।

तुम्हें राबर्ट ब्रूस और मकड़ी की कहानी याद है? "क्या सैकड़ों, नहीं नहीं, हज़ारों असफल प्रयत्न प्रत्येक महान् आविष्कार के पूर्वगामी नहीं होते हैं?" खूब सवेरे यदि आध घंटा यह मन्त्र जपने में तुम लगाओगी तो अच्छा करोगी (मन्त्र न देने के लिये क्षमा करिये)। इस मन्त्र को जपते समय इस में निहित सत्य को अपनी प्रकृति में प्रबलता से भरते रहो। इस प्रकार की निरन्तर आत्म-सूचना तुम्हें पूरा संन्यासी (स्वामी) बना देगी। कृपया शीघ्र लिखना कि तुम्हारी यात्रा के सम्बन्ध में क्या बन्दोबस्त हुआ। गम्भीरतम प्रेम और अत्यन्त सच्चे आदर के सहित।

तुम्हारा निजात्मा

राम स्वामी।

॥ ॐ ॥

शास्ता स्प्रिंग्स, कैलीफोर्निया,

२१ अक्तूबर, १९०२।

अत्यन्त धन्य और दिव्य सूर्य्यानन्द,

तुम्हारा कलह का पत्र अभी मिला।

ओह! कैसा सुखकर सम्वाद है, भारत के लिये प्रस्थान। हांगकांग में यदि आप सेठ वस्सिया मल आसुमल (घंटाघर

के निकट) से मिलोगी तो हिन्दू व्यापारियों को राम (तीर्थ) की आनन्दावस्था और अपने श्रेष्ठ उद्देश्य का समाचार दे कर आप उन्हें प्रसन्न कर सकोगी।

जिन लोगों को चिट्ठियां दी जा चुकी हैं वे सब स्थानीय मामलों के सम्बन्ध में तुम्हें संतोषजनक समाचार से सुबोध कर देंगे। तुम्हें केवल चल पड़ने की ज़रूरत है, बाद को अन्य हरेक बात यथेष्ट स्निग्धता से चलेगी। एक बात ध्यान में रखना। जब किसी सम्प्रदाय के लोगों से मिलने का तुम्हें इत्तिफ़ाक़ हो, तब दूसरे दलों की जो समालोचना वे करें उस पर आप कदापि नहीं, कदापि नहीं, कदापि नहीं ध्यान दें, इस का खयाल रक्खें, या इसे याद रक्खें। यदि कहीं भी आप को भक्ति, अलौकिक प्रेम, दानशीलता, या आत्मिक ज्ञान की वृत्ति दिखाई पड़े, तो उसे तुम ग्रहण करो, सोक लो, अपना निजांग रूप बना लो, और किसी व्यक्ति के द्वेष को ग्रहण करने का समय न पाओ। उन की दुर्बलताओं और त्रुटियों पर ध्यान न दो।

कलकत्ते में सेठ सीताराम को मिलने से न भूलना। कलकत्ते में तुम (मासिक पत्र) "डान" के विद्वान सम्पादक से भी मिल सकती हो, जो निराभिमानी, विशुद्ध, आत्मत्यागी, श्रद्धालु और कट्टर वेदान्ती पुरुष हैं। वे एक शिक्षा और छात्रावास संस्था भी सफलता-पूर्वक चला रहे हैं। कलकत्ते में तुम संकीर्तन, भक्ति पूर्ण नृत्य का भी सुखोपभोग कर सकती हो।

भारत माता सदा तुम्हें उसी तरह ग्रहण करेगी जिस तरह एक प्रेममयी माता वर्षों के बिछुड़े बच्चे को लौटने पर ग्रहण करती है। वर्तमान के लिये भगवान तुम्हारा कल्याण करे। राम सदा तुम्हारे साथ है।

Passage to India!
O! We can wait no longer!
We too take ship, O soul!
To you, we too launch out on trackless seas!
Fearless for unknown shores. On waves of ecstacy
To sail. Amid the wafting winds
Carolling free, — singing our song of God!
Chanting our chant of happy soothing OM!
Passage to India!
Sailing these seas, or on the hills, or waking in the night,
Thoughts, silent thoughts of Time and
Space and Death like waters flowing,
Bear me indeed as through the regions infinite
Whose air I breathe, whose ripple..........

....

Bathe me O God in Thee, mounting to Thee,
I and my soul to range, in range of Thee,
Passage to Mother India!
Reckoning ahead, O soul, when Thou the time achieved,
The seas all crossed, weathered the copes, the voyage done,
Surrendered, copest, frontest, God.
Yieldest, the aim attained.

As filled with friendship, Love complete,
The Elder Brother found,
The younger melts in fondness in his arms.
Passage to India!
Are the wings plumed indeed for such far
flight?
O soul, voyagest thou indeed on voyages like
these?
Soundest below the Sanscrit and the Vedas?
Then have thy bent unbashed.
Passage to you, your shores, ye aged fierce
enigmas,
Passage to you, to mastership of you, you
Strangling problems,
Passage to mother India,
O Secret of earth and sky!
Of you, O waters of the sea!
O winding creeks and Ganges!
Of you, O woods and fields! Of you, O
mighty Himalayas,
O morning red! O clouds! O rain and snows,
O day and night, passage to you!
O sun and moon, and all ye stars, stars,
Sirius and Jupiter, Passage to you!
Passage, immediate Passage!
The blood burns in my veins!
Away O soul, hoist instantly the anchor,

Cut the hawsers — haul out — shake out every sail.
Have we not stood here like trees in the ground long enough?
Sail forth, steer for the deep waters only,
O we are bound where mariner has not yet dared to go,
And we will risk the ship ourselves and all.
O my brave soul!
O father, father, sail.
O daring joy but safe,
O father, father, sail
To your real Home.

Rama

भारत की यात्रा।

अरे! अब हम नहीं रुक सकते!
हम भी जहाज़ पर सवार होते हैं, ऐ आत्मा!
तेरे लिये, हम भी पथहीन समुद्र में नाव छोड़ते हैं!
निर्भय होकर अज्ञात तटों के लिये!
अत्यानन्द की लहरों पर।
समुद्र यात्रा करने को हम भी तैयार होते हैं। वहां ले जाने वाली हवा के बीच स्वच्छन्दता से आनन्द के गीत गान अर्थात् भगवत् भजन करते और सुखमय शान्ति कर ॐ का उच्चारण करते हुए हम भी चलने को तैयार हैं,
ऐ भारत यात्रा!
इन समुद्रों में यात्रा करते या पहाड़ों पर चलते, अथवा रात में जागते हुए,

विचार—काल, देश और मृत्यु के मौन विचार—जलवत् बहते हुए,
वस्तुतः मुझे मानों अनन्त प्रदेशों के मध्य में से ले जाते हैं।
जिन की वायु में सांस लेता हूँ, जिस की तरंग ....

....

ऐ परमेश्वर ! मुझे अपने में नहला, तेरी ओर चढ़ते हुए,
मैं और मेरी आत्मा तेरी पंक्ति में भ्रमण करें।
ऐ भारत माता की यात्रा !
आगे को काल गिनते हुए ऐ आत्मा, अब समय रूप 'तू' प्राप्त हो गया,
सब सागर पार कर लिये, झंझटों को सम्हाल लिया, यात्रा पूर्ण हो गई,
आत्मसमर्पण किया, अब परमेश्वर झगड़ता है,
सामना करता है और अधीन होता है, लक्ष्य प्राप्त हो गया ।
मानो परिपूर्ण मित्रता से, पूर्ण प्रेम से,
बड़ा भाई मिल गया,
छोटा उस के अंक में स्नेह से पिघला जाता है।
ऐ भारत यात्रा !
क्या इतनी दूर की उड़ान के लिये वस्तुतः पंख सधे हुए हैं ?
ऐ आत्मा, क्या सचमुच तू ऐसी यात्राओं की यात्रा करती है ?
क्या नीचे (इस लोक में) तू संस्कृत और वेदों की ध्वनि करती है ?

तब वे अपनी निर्लज्ज लग्न तू प्राप्त कर।
ऐ वृद्ध भयानक पहेलियों! तुम्हारी ओर, तेरे तटों की ओर यात्रा हो!
ऐ गलाघुटती समस्याओं! तुम्हारी ओर यात्रा, तुम्हारे स्वामित्व की ओर यात्रा हो!
भारत माता की यात्रा हो!
ऐ पृथिवी और आकाश का रहस्य!
ऐ समुद्र के जल!
ऐ चक्करदार दरारें और गंगा तुम्हारा रहस्य!
तुम्हारा (रहस्य) ऐ बनो और खेतो! तुम्हारा रहस्य, ऐ शक्तिशाली हिमालय,
ऐ मेघों! ऐ वृष्टि! और हिमों! लाल प्रभात का रहस्य,
ऐ दिन और रात, तुम्हारी यात्रा हो।
ऐ सूर्य और चन्द्र, और सब तुम नक्षत्रों, तुम्हारी यात्रा हो,
नक्षत्रों, बुध और बृहस्पति, तुम्हारी यात्रा हो!
यात्रा तुरन्त यात्रा !
मेरी नाड़ियों में रक्त जलता है!
ऐ आत्मा, तुरन्त लंगर उठाओ, रस्सियां काट दो, खींच लो, हरेक बादबान हिला दो!
भूमि में वृक्षों की भांति क्या हम काफी देर तक यहां खड़े नहीं रहे?
खेओ, केवल गहरे जल (समुद्र) के लिये खेओ,
क्योंकि हम वहां जाने वाले हैं जहां अब तक किसी मल्लाह ने जाने की हिम्मत नहीं की है,
और हम जहाज़ को, अपने आप को, और सब कुछ को जोखिम में डालेंगे।

ऐ मेरे वीर आत्मा !
ऐ पिता, ऐ पिता ! खेओ।
ऐ साहसी किन्तु सुरक्षित आनन्द,
ऐ पिता, पिता !
अपने सच्चे घर को खेओ।

राम

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

ॐ

शिकागो, इल्लीनोइस।
१५ फरवरी १६०४।

अत्यन्त धन्य आत्मा

आप के अनेक पत्र, तार, और सब कुछ ठीक समय पर राम को मिले। जब केवल एक ही तत्त्व है, तो कौन किस को धन्यवाद देगा ? राम हर्ष से परिपूर्ण है, राम सर्व आनन्द है। राम सर्वदा पूर्ण शान्ति है। कार्य राम से बहता है। राम कोई काम नहीं करता है। तू स्वयं सुगन्धित गुलाब हो, और मधुर गंध आप ही चहुँ ओर तुझ से, मुझ से, ओ मुझ से, बहेगी।

क्या तुम अपने आप को पूर्ण हृदय से हिन्दू समझती हो ? क्या उनकी भूलों और अन्ध विश्वासों को आप अपना समझती हो ? अपने निजी भाइयों और बहनों के समान क्या आप उनपर भरोसा कर सकती हो ? क्या आप कभी अपनी अमेरिका की पैदायश भूली और जन्म के हिन्दू में अपने को रूपान्तरित पाया ? जैसा कि राम प्रायः अपने आप को गहरा रंगा कट्टर ईसाई देखता है। यदि ऐसा है तो अनायास अद्भुत कार्य तुम से निकलेगा।

तुम कौन हो? तुम कौन हो जो पतितों का उद्धार करने को दौड़ती फिरती हो? क्या स्वयं तुम्हारा उद्धार हो गया?

क्या तुम जानती हो कि "जो कोई अपने प्राण बचावेगा, वह उन्हें खोवेगा?" तो क्या तुम नष्टों (भ्रष्टों) में से एक हो? क्या तुम भी एक च्युत (भ्रष्ट) हो सकती हो या होना चाहोगी? तब उठो और त्राता बनो। पापी बनो—उससे अपनी एकता का अनुभव करो, और तब तुम उस का उद्धार कर सकती हो। केवल एकमात्र प्रेम-मार्ग से अतिरिक्त और कोई रास्ता सब पर विजय पाने का नहीं है।

ॐ ॐ!

तुम्हारा अपना आत्मा
स्वामी राम के रूप में

ॐ!

मिन्नियापोलिस, एम, एन. अमेरिका
३ अप्रैल १९०४,

अत्यन्त कल्याणात्मा,

तुम कहां हो? मथुरा के लिखे शुभ नये वर्ष के पत्र के बाद प्रिय श्रेष्ठ माता की कोई चिट्ठी नहीं मिली। शान्ति, शान्ति, शान्ति भीतर से आती है। स्वर्ग का साम्राज्य केवल भीतर है। पुस्तकों, देवालयों, देवस्थानों, महात्माओं, और साधुओं में आनन्द की खोज व्यर्थ है। तुम्हारे अनुभव ने अब तक तुम पर यह ज़रूर प्रकट कर दिया होगा। यदि यह पाठ एक बार पढ़ लिया गया तो मूल्य कुछ भी देना पड़े, पर वह महँगा किसी दामों नहीं होगा। अकेले बैठो, अपनी पीड़ा वा आकुलता को दिव्य आनन्द में परिणत कर दो। "थंडरिंग डान" सरीखी पुस्तकों से उत्साह प्रद

सूचनाएँ आप को प्राप्त हो सकती हैं। ॐ का चिन्तन (ध्यान) करो! और मानवजाति निमित्त शान्तिके दाता बनो, न कि एक आशाशील अन्वेषक। प्यारी! "शास्ता स्प्रिंग्स" में क्रीक (Creek) के पास राम ने जो अन्तिम शिक्षा तुम्हें दी थी, क्या वह तुम्हें याद है? वह शिक्षा मंगता की दशा से नहीं दी गई थी, वल्कि प्रकाश और प्रेम के नित्य दाता की हैसियत से दी गई थी, जब हमारा मँगने का भाव होता है, तब हमारे हृदय फट जाते हैं। अमेरिकनों के प्रति राम की अपील में भारत की जो दशा बयान की गई है वह तुम ने तसदीक कर ली होगी। दया करके उस व्याख्यान को एक बार फिर पढ़ लेना। अपने निष्काम श्रम से किसी तात्कालिक, प्रत्यक्ष फल की आशा न करना। ईसा की आत्मा कहती है, "सेवासे सन्तुष्ट रहो!" सेवाके अधिकार से बढ़कर कोई पुरस्कार, आशीर्वाद या इनाम नहीं है। यदि लखनऊ के "ऐडवोकेट" के सम्पादक बाबू गंगाप्रसाद वर्मा से आप नहीं मिली हैं तो कृपया उसे ज़रूर मिलिये। भारत के ग़रीब हिन्दुओं के कष्टोंमें भाग लेने में आप के हृदयको क्या अधिक सुख प्राप्त होता है या अमेरिका में जीवन के सुखों को भोगने में? (यहां तक कि) मैं फिर भारतवर्ष में उत्पन्न होना चाहता हूँ।

ॐ! ॐ!! ॐ!!!

राम एक महीने तक पोर्टलैंड (ओरीगन) में, एक महीने डेनवर में, दो सप्ताह शिकागो में, और दो सप्ताह मीनियायोलिस में था। इन स्थानों में वेदान्त सभाएँ सँगठित हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में निःशुल्क छात्रवृत्तियां गरीब हिन्दू विद्यार्थियों के लिये प्राप्त की गई हैं। यहां से

राम बफ़ैलो, (न्यो यार्क) को जायगा। वहां से बोस्टन, निउयार्क, फिलाडलफ़िया और वाशिंगटन डी. सी. को जायगा। पहिली मार्च और २६ व ३० जून को सैंटलूईस में वर्ल्डस यूनिटी लीग (संसारभर के मिलाप की संस्था) के अधिवेशनों में राम को उपस्थित होना होगा। जुलाई में राम लेक जेनेवा में होगा। दूसरे शरत्काल में राम लंदन, इंग्लैंड जायगा। प्यारी माता! साहस न छोड़ो। वस्तुओं के केवल उज्ज्वल पक्ष (bright side) की ओर देखो। विना कांटे के एक भी गुलाब नहीं है, इस अमिश्रित संसार में पुण्य कहां? पुण्य स्वरूप तो केवल परमात्मा है। यदि भारत में असली वेदान्त (सत्य) होता तो अमेरिका से अपील करने की क्या ज़रूरत पड़ती? जब तुम्हारा हृदय सर्व की सुन्दरता से पूरी तरह एकस्वर हो जायगा, तब तुमको सब कहीं हरेक वस्तु महोज्ज्वल मालूम पड़ेगी। शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

केन्द्रीय आनन्द, आन्तरिक हर्ष, सदा और सर्वदा के लिये (तुम्हारे साथ हो)।

तुम्हारा अपना आत्मा
स्वामी राम के रूप में

ॐ! ॐ!! ॐ!!!

विलियम्स बे, विस, या लेक जेनेवा,
८ जुलाई १९०४,

अत्यन्त कल्याण रूप दिव्य आत्मा,

तुम्हारे पत्र राम को मिले। धन्यवाद। राम स्थिति को पूरी २ तरह समझता है। शान्ति, आनन्द और सफलता

सदा तेरे साथ रहेगी। अधिकार जमाने की भावना और अभिलाषा जिस पवित्र आत्मा ने दूर कर दी उसके लिये कोई भय, खतरा या किसी प्रकार की कठिनता नहीं है। मैं विश्व में अपने को पसारता हूँ और स्वच्छन्द हुआ आराम करता हूँ। छाती में भुजंग यह परिच्छिन्न "मैं" ही है। उसे निकाल कर फेंक दो, और सारा संसार तुम्हारा सत्कार करेगा। मिनियापोलिस से "राम" के लौटने पर एक लम्बा टाइप किया हुआ पत्र "प्रैकटिकल विज़डम" (मासिक पत्र) में प्रकाशनार्थ आप को भेजा गया था। पत्र का विषय था "व्यवहार में लाने योग्य वा व्यवहार सिद्ध ज्ञान"। सेंट लुइस में वर्ल्डस यूनिटी लीग की प्रथम बैठक "राम" की अध्यक्षतामें आरम्भ हुई। यूनिटी लीगमें राम के व्याख्यानों के साथ २ कुछ अन्य स्थानों के अतिरिक्त सेंट लुईस में स्थापित थियासोफिकल सोसाइटी और चर्च आफ प्रैक्टिकल क्रिश्चियैनिटी के आश्रमों के तले भी प्रवचन हुए थे। कुछ दिनों में राम शिकागो जायगा,वहां से बफैलो, लिलीडेल और ग्रीनएकर (मेन) जायगा, और सितम्बर में या पहले ही अमेरिका से रवाना होजायगा। सबको शान्ति कल्याण और प्रेम पहुँचे।

तुम्हारा अपना आत्मा
स्वामी राम के रूप में

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

जैकसनविल्ले. फलोरिडा,
१ अक्तूबर १९०४,

अत्यन्त कल्यालस्वरूप प्रियात्मा,

राम ने कुछ दिनों से तुम्हें कुछ भी नहीं लिखा है। इसका कारण यह है—

(१) राम निरन्तर बहुत मसरूफ (कार्यव्यग्र) रहा,

(२) समाचार पत्रों के लिये कुछ पत्रों के सिवाय भारत में किसी व्यक्ति को पत्र नहीं लिखे गये,

(३) यह जान कर कि तुम अच्छे हाथों में (सज्जनों के पास) हो, राम ने पत्र भेजना आवश्यक नहीं समझा,

(४) जब से मिन्नियापोलिस छोड़ा, तब से राम को तुम्हारी कोई चिट्ठी नहीं मिली।

शान्ति कल्याण, प्रेम तथा आनन्द सदा और सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

स्वयं अपनी भीतर की आवाज़ (नाद) का ठीक २ अनुगमन करने में तुम किसी के प्रति झूठ नहीं होसकते हो। हमने किसी का भी कुछ देना नहीं है। हमारा परिश्रम प्रेम का परिश्रम (निष्काम) होना चाहिये। सदा गम्भीर और सम्पन्न होना हमारा नियम वा सिद्धान्त होना चाहिये।

हरेक नर और नारी को स्वच्छन्दता से अपना अपना अनुभव करने दो। हमें केवल यही अधिकार है कि अपने साथी मनुष्यों को उनकी अग्रसर गति में सहायता दें। जब मैं मित्रों को उनके आध्यात्मिक पतन में सहायता देता हूँ, तब उनके साथ मैं स्वयं गिरता हूँ। तुम कुछ भी करो, कहीं भी तुम हो, राम का आशीर्वाद और प्रेम तुम्हारे साथ है। परसों "राम" नियुयार्क के लिये रवाना होगा। बहुत सम्भव है कि ८ अक्तूबर को (राम) प्रिंसेज़ आईरीन (Princes Irene) नामक जहाज़ पर सवार होकर जिब्रालटर जायगा। सम्भवतः भारत पहुँचने में कुछ समय लगे, क्योंकि राह में अनेक स्थानों में ठहरने की संभावना है।

याद रखने और अमल करने के सूत्रः—

यदि किसी मित्र के किसी दोष को आप जानते हों तो उसे भुला दो।

यदि उसकी कोई अच्छी बात जानते हो तो वह कह दो।

"वह परमेश्वर सब लोगोंके हृदयोंमें ऊँचे पर विराजमान है और वह भी जो कि हम लोगों में दोष प्रतीत होगा।

उस का चेहरा अत्युतम रसायन की तरह नेकी और योग्यता में बदल जायगा। उस निर्भय निरन्तर दाता की सूर्यवत् वृत्ति, जो (वृत्ति) विना किसी पुरस्कार की आशा के सेवा करती है, जो विघ्नरहित प्रेम से प्रकाश और जीवन का प्रसार करती है, ईश्वर के तेज की तरह दिव्य प्रभा में निवास करती है, जो व्यक्तित्व की सम्पूर्ण भावना से परे है, और स्वार्थ परता से मुक्त है, वही मुक्ति और उद्धार है।

"I eat of the heavenly manna,
I drink of the heavenly wine,
God is within and around me,
All good is for ever mine."

"मैं स्वर्गीय वंशलोचन खाता हूँ,
मैं स्वर्गीय मदिरा पान करता हूँ,
परमेश्वर मेरे भीतर और इर्दगिर्द है,
सारी भलाई सदा के लिये मेरी है।"

तुम्हारा अपना आत्मा
स्वामी राम

(मिसिज़ वैलमैन अर्थात् सूर्यानन्द का राम के खत के उत्तर में नीचे लिखा पत्र विना तारीख का है।

"ओह, इन अमूल्य चिट्ठियों के पढ़ने में क्या लुत्फ़ है ! और इनकी नक़ल करना अधिक प्रकाश, हर्ष, पवित्र और बढ़ा चढ़ा अनुभव प्रदान करता है। प्यारे पूरन ! मैं जानती हूँ, इन से तुम्हें आनन्द मिलेगा, और फिर जिन्हें तुम ये देओगे उन सब को ये सहायता पहुँचावें गे । पूरी नक़ल देना तो असम्भव है। कल्याण स्वरूप दिव्य गुरुदेव का (aura), ओजस (तेज) कागज़ और गुरुदेव की लिखी सब पंक्तियों में व्याप्त है। मेरे लिये सब से अधिक मूल्यवान यही हैं। स्वयं राम ही मेरे निकट उपस्थित हो जाते हैं जब मैं उन सात्विक पंक्तियों को पढ़ती हूँ, जो मेरे हृदय में प्रेरणा उत्पन्न कर देती हैं, हां मेरे मन और हृदय को प्रकाशित करती हैं, यहां तक कि आत्मा की उज्ज्वलता दिखाई देने लगती है, और मेरी आत्मा, वास्तविक दिव्यात्मा एक मात्र तत्त्व मुझे भान होती है।

सूर्य्यानन्द।

——:०:——

निम्न लिखित पत्र एक सूर्य्यानन्द को राम के अमेरिका से भारत पहुँने पर लिखा गया था।

हर्ष ! हर्ष ! हर्ष !

ॐ ! ॐ ! ॐ !

बम्बई।

अत्यन्त धन्य रूप प्रिय माता,

राम बम्बई में पांच दिन से है और शीघ्र मथुरा पहुँचेगा। व्याख्यानों और लोगों से मिलने जुलने में राम सदा अति प्रवृत्त रहता है। राम सदा की भांति अत्यन्त प्रसन्न

है। आप अभी तक भारत में हैं यह सुन कर 'राम' को बड़ी खुशी हुई। ईश्वर तुम्हें पूर्ण स्वस्थता, हृदय में शान्ति, प्रफुल्लित वृत्ति, और आनन्दमय चित्त प्रदान करें। तुम से मथुरा में मिलने की मैं आशा करता हूँ।

आप का
आत्मा में रहने वाला
स्वामी रामतीर्थ

——:※:——

ॐ!

आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !

प्यारे पूरन, तुम जानते हो कि हम सब मथुरा में कैसे मिले। और तुम सभाओं का हाल भी जानते हो। कैसा धन्य समय वह था।

धन्य ! धन्य !

ॐ ! ॐ ! ॐ !

पुष्कर,
१४ फरवरी १६०५।

अत्यन्त धन्य रूप प्रिय दिव्य माता,

बम्बई विश्वविद्यालय के एक उपाधिधारी (बी. ए. उत्तीर्ण विद्यार्थी), एक सुन्दर युवा पुरुष ने आज राम के कार्य में अपना जीवन अर्पण किया है। वह राम के साथ रह कर साहित्य के कार्य में सहायता दिया करेगा। प्यारा परमेश्वर या विधाता कितना भला है। जो उस पर भरोसा करके काम करते हैं उन को वह कभी धोखा नहीं देता है।

नारायण स्वामी शीघ्र विदेशों में व्याख्यान देने को भेजे जायँगे। चिविक्तस्थानों और देशान्तरों का काम भी उतना

ही महान है जितना उज्ज्वल केन्द्रों का। रहट में दांत के सदृश छोटी लकड़ी का सहारा (हिन्दुस्तानी में जिसे कुत्ता कहते हैं) भी उतनाही महत्वपूर्ण है जितना कि बैल। यदि क्षुद्र लकड़ी का सहारा हटा लिया जाय तो फिर सारा यन्त्र नहीं टिक सकता। नहीं, नहीं, चक्र में लगी हुई हरेक कील अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि देखने में ऐसी छोटी चीजों का बच्चे उपयोग नहीं करते हैं तो क्या हुआ। ईश्वर की दृष्टि में छोटा से छोटा कार्य भी, प्रेम वृत्ति से किया जाने पर, बहुत बड़ा है। नन्हा सा ओसकण प्रभापूर्ण सूर्य के सामने कुछ भी नहीं जान पड़ता है, किन्तु विचारवान् की दृष्टि देखती है कि वही नन्हा बूँद समस्त सूर्यमण्डल को अपने मधुर छोटे हृदय में प्रतिबिम्बित करता है। इस लिये, मेरी धन्य प्यारी माता, उपेक्षित स्थानों में कोमल, मौन कार्य, जिस में नाम और कीर्ति नहीं है, उतना ही श्रेष्ठ और अत्यावश्यक है जितना कि खूब शोरगुल का काम जो सम्पूर्ण मानवजाति का ध्यान आकर्षित करता है। मैं जो थोड़ा काम करता जान पड़ता था उस से मैं निराश हुआ था। "वे भी सेवा करते हैं जो केवल खड़े होकर प्रतीक्षा करते हैं।" माता नन्हे बच्चे को लपेटती है, और उस का समय जब उसे विश्वविद्यालय में लाता है, तब अध्यापक सयाने लड़के को पढ़ाता है, माता का कार्य उतना उच्च और कीर्तिकर हीं है जितना कि अध्यापक का। तथापि माता का कर्तव्य अध्यापक से कहीं अधिक मधुर और महत्वपूर्ण है। हम यह नहीं सह सकते कि बचपन में माता की गोद और सुलाने की थपथपाहट का स्थान अध्यापक का कमरा और शिक्षा ग्रहण कर ले।

वेदान्त चाहता है कि साधारण कुली अपने दीन वा छोटे

से परिश्रमको ठीक कृष्ण या ईसा का सा महत्वपूर्ण और पवित्र परिश्रम समझे। कुर्सीका एक पाया जब हम हटाते हैं,तब क्या हम सारी कुर्सी नहीं हटाते हैं? इसी तरह जब हम एक चित्त को उठाते या ऊँचा करते हैं, तब हम उस के द्वारा सम्पूर्ण संसार को उठाते और उत्कृष्ट करते हैं, मनुष्य की एकता (solidarity) इतनी कठोर है।

"अपने आप से परिमित, और परमेश्वर के अन्य कार्य की दशा से निश्चिन्त (बे परवाह) अपनी सम्पूर्ण शक्ति अपने ही कार्यों में डालने वाले सज्जन तुम देखते हो ऐसे महान जीवन प्राप्त करते हैं।

ऐ पवन-जात वाणी! बहुत काल से अत्यन्त स्पष्ट,
तेरी सी एक चीख़ अपने ही हृदय में मैं सुनता हूँ।

निश्चय करो अपने आप में स्थित होने का, और जानो कि जो अपने आप को पाता है वह अपने दुर्भाग्य को खोता है।

ॐ!

हर्ष! हर्ष! ॐ! शान्ति, कल्याण! प्रेम!

——:o:——

राम

पुष्कर, (जिला अजमेर)।
२ फरवरी १९०५,

ॐ! शान्ति, कल्याण! प्रेम! हर्ष!

अत्यन्त धन्य स्वरूप प्रिय माता,

तुम्हारा मधुर, स्वर्गीय पत्र प्राप्त हुआ। शरीर पर ऐसा सुन्दर काबू होना जैसा कि कल्याण रूप सूर्यानन्द का है,

वास्तव में परमेश्वर से विचित्र स्वरैक्य (एक स्वरता) है, और प्रेम से अद्भुत तालैक्य (एक तालता) है। (मैं बीमार था, और दिव्य शक्ति से चंगा हुआ हूँ, । प्रेम)

ॐ ! जय ! जय ! जय !

तुम ने जो कविता भेजी थी वह अत्युत्कृष्ट थी ।

God moves in a mysterious way
His wonders to perform!
He plants His footsteps in the sea
And rides upon the storm.

Deep in unfathomable mines
Of never failing skill,
He treasures up His bright designs
And works His Sovereign Will.

Ye fearful saints, fresh Courage take.
The clouds ye so much dread
Are big with mercy and shall break
In blessings on your head.

Behind a frowning Providence
He hides in smiling face.
The bud may have a bitter taste
But swe et will be the flower.

परमेश्वर गूह्य ढङ्ग से चलता है

अपने अद्भुत कार्य करने को !
वह सागर में अपने पग जमाता है
और तूफान पर सवार होता है ।

कभी न चूकने वाली दक्षता की,
अथाह गहरी खानों में ।
अपने उज्ज्वल मनसूबों को वह संचित करता है
और अपने सर्व श्रेष्ठ संकल्प को कार्यान्वित करता है,

तुम भयभीत सन्तों (साधुओं) ! नया साहस पकड़ो'
जिन मेघों से तुम इतना डरते हो ।
वे दया से बड़े हैं और तुम्हारे सिर पर
आशीर्वाद में टूटेंगे (वर्षेंगे)

घूरने वाली विधि के पीछे
ईश्वर अपना हँसता चेहरा छिपाता है ।
कली में चाहे कडुआ स्वाद हो,
परन्तु पुष्प मधुर होगा ।

हां, बाबू ज्योतिष स्वरूप वास्तव में भलाई के अत्यन्त धन्य, स्वर्गीय अवतार हैं । वे बड़े ही कृपालु हैं ।

तुम्हारा अपना आत्मा
स्वामी रामतीर्थ के रूप में

पुष्कर, (जिला अजमेर)
ॐ ! हर्ष ! हर्ष ! ॐ ! शान्ति !

धन्य देवी माता,

राम उस छत पर लेटा था जिस पर आप उसके साथ बैठी थीं।

(किशनगढ़ के प्रधानमंत्री की उदारता-पूर्ण कृपालुता के द्वारा मुझे मुबारक राम के साथ पुष्कर में एक दिन व्यतीत करने की आज्ञा मिल गई थी।)

मैं दिव्यज्ञान में डूबा हुआ था, और तब तक बेखबर था जब तक तुम्हारा पत्र कुछ और पत्रों के साथ राम के हाथों में लाकर रक्खा गया था। चिट्ठी खोलने के पहले तक लम्बी, हार्दिक, पुरज़ोर और सुखपूर्ण हँसी तुम्हारी धन्यात्मा को भेजी गई थी। ॐ ! शान्ति ! शान्ति ! शान्ति ! प्रियतम माता, तुम्हारा मधुर पत्र पढ़ने के बाद राम तुम्हें हर्षपूर्ण हँसी की दूसरी महाध्वनि (गरगराहट) भेजता है।

माता, हर प्रकारसे तुम बिलकुल ठीक हो, और राम तुम्हारी पवित्र, मधुर, कोमल, और सौम्य प्रकृति को खूब समझता है। राम विभिन्न विषयों पर लिख रहा है—गद्य और कुछ कविता—परमेश्वर के आदेश के अनुसार।

बाबू गंगाप्रसाद वर्मा लखनऊ तथा अन्य स्थानों में तुरन्त स्त्री-शिक्षा का सुधार करने के उद्देश्य से कन्या पाठशालाओं को देखने के लिये और स्त्री-शिक्षा-पद्धति का अवलोकन करने के लिये विदेशों को भारत के अन्य प्रान्तों में जाने वाले थे। यह कार्य प्रान्तिक सरकार ने उनके सिपुर्द किया है। इस कारण मार्च से पहले वे राम को देखने नहीं आ सके। राम सम्भवतः गर्मी में मैदानों

में न रहेगा । राम को कश्मीर से प्रेम है और तुम्हारी तथा राय भवानीदास और अन्य मित्रों की संगति में उसको बड़ा स्वाद आवेगा। राम की उपस्थिति और वार्तालाप से अगणित क्षुधित आत्माओं को लाभ होगा, यदि राम तुम्हारे साथ कश्मीर जा सका। किंतु दिव्य माता, सब से बड़ा विशेषाधिकार जिसका मनुष्य उपभोग कर सकता है, वह है हृदय, मन, शरीर और सर्वस्व का निरन्तर सत्य और मनुष्यता की वेदी पर जलना है, और यह मार्ग भीतर की भावमयी, विशुद्ध, धीमी, नीरव वाणी के रूप में परमात्मा को स्वीकार है।

"यदि कर्त्तव्य पीतल की दीवारों को
बुलाता वा पुकारता है (दीवारों से सिर टकराने को
कहता है),
तो कौन मूर्ख ऐसा पतित होगा जो हिचकेगा।"

माता! समर्पित जीवन का पथप्रदर्शन प्रायः कोई गुह्य दिव्य चिच्छक्ति करती है, जिसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता।

राम तुम्हारे साथ कश्मीर शायद जाय किन्तु चलने के ठीक समय तक निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

तुम्हारा अपना आत्मा,
राम तीर्थ।

ॐ! ॐ!! ॐ!!!

जयपुर,
६ मार्च १६०५।

अत्यन्त धन्य प्रियतम भगवति,

राम के आने के संबंध में तुम्हारी भविष्यद्वाणी यहां तक सत्य उतरी है कि राम पुष्कर से चल दिया है। यहां से वह किधर जायगा, इसे वह समय आने पर परम विधाता (सूर्य्यों के सूर्य्य) के हाथ में निर्णय के लिये छोड़ता है। दो व्याख्यान अजमेर टाउन हाल में दिये गये थे। लोग जयपुर के टाउन हाल में व्याख्यानों का प्रवन्ध करने वाले हैं। पूरन पुष्कर गया था, और दो या तीन दिन तक राम के साथ पहाड़ों पर घूमा। दिलजंगसिंह बड़ा ही सुशील है। झुंड के झुंड लोग राम को देखने आते हैं और इसका अन्त होना चाहिये। परमेश्वर और मैं!

आज सारे दिन हम साथ जाँयगे, सदा प्रेम पियासे रात को हम साथ सोवेंगे और सवेरे उठेंगे तथा जहां कहीं पग लेजाँयँगे वहाँ जाँयगे, एकान्त स्थानों में या भीड़ में, सब ठीक ही होगा। हम यात्रा का अन्त करने की इच्छा न करेंगे, न विचार करेंगे कि परिणाम क्या होगा! क्या सब बातों का अन्त अभी से हमारे साथ नहीं है?

ॐ! ॐ!! ॐ!!!.

राम शीघ्र ही चिठ्ठियों की पहुँच के परे जंगलों में, पहाड़ों में, परमेश्वर में, तुम में होगा। न मालूम कब फिर तुम्हें पत्र मिले।

तुम्हारा निजात्मा

राम

शान्ति, कल्याण, प्रेम सदा तुम्हारे साथ रहे।

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

हरद्वार ।
सायंकल, गुरुवार ।

अत्यन्त धन्य प्रिय माता,

आपकी भविष्यद्वाणी ठीक उतरी और राम|दिहरा तथा अपनी देवी माता की ओर आ रहा है। किन्तु लोगों ने अत्यन्त प्रेम के कारण राह में कई स्थानों पर राम को रोक लिया है। अलवर, मुरादाबाद, अजमेर और जयपुर में व्याख्यान दिये गये हैं। अपने प्रिय धन्य बाबू ज्योतिस्वरूप का रेल में संग छोड़ कर, राम हरिद्वार में रुका है। यहां के लोगों को राम की उपस्थिति का पता लग गया है और वे बड़े प्रेम से राम से अधिक काल तक ठहरने की प्रार्थना करते हैं। राम भी यह उचित नहीं समझता कि जो युवा साधु या अन्य लोग राम से वेद उपदेशों के भूखे या विलक्षण रूप से पात्र हैं, उनकी दशा को सुधारने के लिये उत्पन्न किसी भी जवान साधुओं तथा जो कुछ किया जा सकता है उसे करने का यह मौका खो दिया जाय। जब मथुरा में हम मिले थे, तब माता, तुमने राम से साधुओं में ही काम करने को कहा था। बड़े प्रेम से साधुगण राम के उपदेश ग्रहण कर रहे हैं।

गंगा के उस तट पर चंडी के मन्दिर पर राम आज चढ़ा था। एक मनोहर छोटी सी पहाड़ी की चोटी पर मंदिर स्थित है। और दृश्य अत्यन्त सोहावना। दर्जनों शाखाओं में बँटती, और लौटती हुई गंगा का दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। चंडी मन्दिर से हिमालय के हिमखंड(glaciers) सोने या हीरे के से दिखाई पड़ते हैं।

Blessed One,

Neither praise nor blame,
Neither friends nor foes,
Neither love, nor hatred,
Neither body, nor its relations,
Neither home, nor strange land,
No! Nothing of this world is important,
God is! God is real, God is the only reality.

ओ धन्य स्वरूप,

न स्तुति न निन्दा,
न मित्र न शत्रु,
न प्रेम, न द्वेष,
न देह, न उसके सम्बन्ध,
न घर, न विदेश,

नहीं ! इस दुनिया की कोई भी वस्तु महत्वपूर्ण नहीं है। परमेश्वर है ! परमेश्वर सत्य है, परमेश्वर एक मात्र तत्व वस्तु है।

हरेक चीज़ को जाने दो। परमेश्वर, परमेश्वर केवल सब में सब है। अमर शांति वृष्टिबुन्दों के समान गिरती है। वृष्टिबुन्दों में अमृत गिरता है। राम का मन शान्ति से परिपूर्ण है। हर्ष मुझ से बहता है।

राम सुखी है, और तुम सदा सुखी हो तुम्हें शान्ति ! कल्याण ! प्रेम ! हर्ष ! हर्ष ! ॐ ! ॐ ! ॐ पहुँचे !

तुम्हारे विद्यार्थियों को, मेज़बान और उनकी पत्नी (बाबू और श्रीमती ज्योति स्वरूप) को प्रेम, आशीर्वाद, हर्ष पहुँचे।

तुम्हारा अपना आत्मा,
राम।

---

५ जुलाई १६०५

अत्यन्त धन्य प्रिय आत्मा,

लगभग एक सप्ताह पूर्व तुम्हारे मंसूरी के पते से भेजा हुआ राम का पत्र आप श्रीमती को इससे पूर्व पहुँच गया होगा। अबकी गर्मी में राम काश्मीर नहीं जा सकता। अतः कैलाश, मान सरोवर, तथा अन्य स्थानों की अपनी सैर का उपयोग तुम बड़े सुभीते से कर सकती हो। सुखी अमेरिका में व्यतीत होने वाले पहले के जीवन के दृश्यों की याद दिलाने वाले भूभागों को सुन्दर पहाड़ी दृश्यों में देख कर निश्चय तुम्हें घर का अनुभव होगा।

Rama is very happy!
In the floods of life, in the storm of deeds
up and down I fly,
Hither and thither weave,
From birth to grave,
An endless web,
A changing sea,
Of glowing life,
Thus in the whistling loom of time,
I fly weaving the living robe of Deity.

राम बड़ा प्रसन्न है !
जीवन की बाढ़ियाओं में, कार्यों के तूफान में
ऊपर और नीचे मैं उड़ता हूँ,
यहां और वहां;
जन्म से मृत्यु तक,
एक अन्तहीन जाला,
और देदीप्यमान जीवन का,
एक परिवर्तन शील सागर मैं बीनता हूँ !
इस तरह समय की सीटी बजाते हुए करघे में,
मैं देवता की असली पोशाक को।
बीनता हुआ उड़ता हूँ !

ॐ !

तुम्हारा अपना आत्मा
राम,

ॐ !

१० अगस्त १६०५

कल्याण ! प्रेम ! हर्ष !
शान्ति ! शान्ति !

अत्यन्त कल्याणमयी प्रिय माता,

कुछ दिन बीते, तुम्हारी चिट्ठी मिली थी। किन्तु हाल में राम ने किसी चिट्ठी का जावब नहीं दिया है। आज तीन अति उपयोगी पुस्तकें समाप्त हुई हैं, जिन्हें राम भाषा में जनता के लिये लिख रहा था। अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है ? राम तुम्हारे पूर्ण स्वास्थ्य और बल का अभिलाषी है।

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

अमेरिका को तुम्हारी यात्रा का प्रबन्ध करना तनिक भी कठिन काम नहीं है, किन्तु हम लोग चाहते हैं कि तुम हम लोगों के साथ रहो। शायद यह स्वार्थपूर्णता है, किन्तु आप भी तो यहां के लोगों को प्यार करती हैं। क्या आप को यह निश्चय है कि शरीर की दुर्बलता का कारण केवल भारतीय जलवायु है, और अमेरिका लौट जाने से आप को अवश्य लाभ होगा? यदि ऐसा है, तो हम में से किसी को भी आप को यहां रखने की ज़िद न करना चाहिये। आप के कुशल-पूर्वक कैलीफोर्निया पहुँचने में हम सब को सहायक होना चाहिये।

शान्ति! हार्दिक आशीर्वाद! प्रेम!

आशा है कि यह पत्र आप को स्वस्थ पावेगा।

ॐ!

राम।

ॐ! ॐ!! ॐ!!

शान्ति! कल्याण! प्रेम! हर्ष! हर्ष!

अत्यन्त कल्याणमयी प्रिय भगवति,

शायद तुम्हें पहले ही से मालूम हो कि राम पहाड़ में मसूरी से लगभग एक हज़ार मील दूर है। बंगाल के जंगली मेहकमे के अधिकारियों के एक पुराने मकान में राम बिलकुल अकेला रहता है। यह स्थान रेल लाइन से दूर, डाकघर से हटा हुआ, आगन्तुकों और मिलने वालों की पहुँच से परे, दुनियां के एक अत्यन्त मनोहर दृश्य से घिरा हुआ है। इस के थोड़ी ही दूरि पर सुन्दर झरने और चश्में

बह रहे हैं, और जब वर्षा-बादल नहीं होता, तब दुनिया का सर्वोच्च पहाड़ गौरीशंकर (Mt Everest) दूर पर दिखाई पड़ता है। यहां भी बनवासी पहाड़ी लोग राम के लिये ताज़ा दूध लाते हैं। वन में विचरने और अध्ययन करने में राम का समय बीतता है।

जब "मनुष्य वन में परमेश्वर से मिल सकता है," तब यह नाम, यश, आकांक्षाएँ, दौलत, कृतकार्यता और सर्वस्व किस काम का? "कुछ करने के बुखार" को हम क्यों ग्रहण करें और पोषण करें?

हमें दिव्य स्वरुप होने दो। प्रातःकालीन पवन चलती है और उसे यह चिन्ता नहीं होती कि कितने, और किस प्रकार के, फूल खिले हैं। वह केवल हरेक वस्तु पर चलती है, और जो कलियां खिलने को बिलकुल तैयार हैं, वे अपनी आँखें खोल देती हैं। शेरों की कंदरें, जलते हुए वन, मैले-कुचैले कारागार, भूकम्प के धक्के, गिरती चट्टानें, तूफान, समरभूमियां और मुख पसारे हुई क़बें, यदि हम में ईश्वर-भावना साथ २ लावें, तो वे इस तड़क भड़क, सम्मान, महिमा, सिंहासनों, बिलासी परिजन समूह (retinue) और अन्य समस्त वस्तुओं से कहीं अधिक मधुर हैं, कि जिनसे युक्त मनुष्य स्वयं आन्तरिक एकान्त में भीतर हृदय में अद्वैत से एक नहीं है।

ओह! कृतकार्य की खुशी, प्रत्येक पग को अपना उद्देश्य वा लक्ष्य बनाने वाले हलके २ कदम, प्रत्येक रात शारीरिक मृत्यु और प्रत्येक दिवस हमारा नवजीवन (नित्य हो, नित्य हो)।

Farewell, friends, and part,
The mansion universe is too small.
I and my love alone will play, Oh!
The joys of swimming together!
Together? No. The joy of swimmers
dissolved rolling as the ocean!
joy ! joy !

अन्तिम नमस्कार, मित्रो !
और हम अलग होते हैं,
मेरे लिये विश्व-महल बहुत छोटा है।
मैं और मेरा प्यारा अकेले खेलेंगे, ओह !
ओ साथ तैरने के मज़े !
साथ ? नहीं, नहीं, तैराकों की ख़ुशी
समुद्र की तरह लहराते हुए घुल गई !
हर्ष ! हर्ष !

ॐ

तुम्हारा अपना आत्मा

ॐ ।

निम्न लिखित भी एक (कविता का) भाग है और अभी मुझे मिला है।

"Om! Peace! Peace! Disciple! up! untiring hasten to bathe thy breast in the morning red."

"As journeys this earth, her eye on a Sun through the heavenly spaces and radiant in azure, or sunless swallowed-in tempests."

"Halters not, journeying equal sunlit, or stormgirt."
So thou, son of earth, who hast force, goal, and time, *go still onward.*"

" As the light of the sun in the rain mist,
As the stars reflect in the sea;
So what to my wonder seems vastest
Is but a reflection from me,
And all things that my spirit revereth,
All grandeurs my heart would enshrine,
By command of the silence that heareth,
Already for ever were mine.
All arguments may fail,
All formal creeds prove false,
Only the limping soul needs Logic's crutches
While to the pure in heart the very air breathes,
And the very ground pulses with truth.
Nature and God within man's heart are one.
Why should I pray? Since all things far and near.
But answer to my spirit's most needs.
I bring my joy, my gratitude, my love,
I enter into life fearless and confident,
I cleanse myself from every hateful thought,
I make my daily toil a song of praise.

I love the earth and feel its very life is part of me.

My only prayer is gladness which I love,
Why should I make appeal for help from some far source?
Since life is mine, since I am one with Him,
Who is my life."

"ओं! शान्ति! शान्ति! ऐ शिष्य! उठो!
प्रातःकालीन लालिमा में अपनी छाती निमज्जित करने को अक्लान्त जल्दी करो"।

"जैसे यह पृथिवी सूर्य पर अपनी आँख लगाये, आकाशी स्थानों में होती हुई और नीलिमा में आरक्त, या सूर्यहीन तूफानों में निगली हुई यात्रा करती है"।

"ठहरती नहीं है, समान रूप से सूर्य से प्रकाशित या तूफान से ग्रस्त हुई यात्रा करती है"।

वैसे ही तू, हे पृथिवी के पुत्र, जिसमें शक्ति,
लक्ष्य और समय है, "अब भी आगे जा"
जैसे सूर्य का प्रकाश वर्षा के कोहरे में,
जैसे नक्षत्र सागर में प्रतिबिम्बित होते हैं;
वैसे ही जो मेरे आश्चर्य को विराटतम प्रतीत होता है,
मेरी केवल एक प्रतिच्छाया है।
और सब वस्तुएँ जिनका आदर मेरी आत्मा करती है,
सब विभूतियां जिन को मेरा हृदय अपनावेगा,
जो मौनता सुनती है उसकी आज्ञासे,
जो पहले ही से सदा के लिये मेरी थीं।
सब वहसें बेकाम हो सकती हैं,

सब नाम मात्र मत मिथ्या साबित होते हैं,
केवल शिथिल चित्त को तर्क के आधार की ज़रूरत
होती है।
जब कि पवित्र हृदय वाले को खुद हवा स्वांस लेती है,
और स्वयं भूमि की नाड़ी सत्य से चलती है।
मनुष्य के हृदय में प्रकृति और परमेश्वर एक हैं।
मैं क्यों प्रार्थना करूं? जब कि सब चीज़ें दूर और
निकट
केवल मेरी आध्यात्मिक अत्यन्त आवश्यकताओं को
पूरा करती हैं।
मैं अपना हर्ष, अपनी कृतज्ञता, अपना प्रेम लाता हूँ।
मैं जीवन में निर्भय और निधड़क हुआ प्रवेश करता हूँ।
मैं अपने आपको प्रत्येक द्वेषमय विचार से स्वच्छ
करता हूँ।
मैं अपने दैनिक श्रम को स्तुति का स्तोत्र बनाता हूँ।
मैं पृथिवी को प्यार करता हूँ, और उसके निज-जीवन
ही को अपना अंश समझता हूँ।
मेरी एक मात्र प्रार्थना प्रसन्नता है, जिसे मैं प्यार
करता हूँ,
किसी दूरस्थ कारण से मैं सहायता की विनती क्यों करूँ?
जब कि प्राण मेरा है, जब कि मैं "उससे" एक हूँ
जो मेरा प्राण है।"

ॐ! ॐ! ॐ!!!

आप स्वयं
राम।

प्यारे पूरन,

इन मूल्यवान चिट्ठियों में भाग लेने से मैं प्रसन्न हूँ। हम दोनों राम के शिष्य थे। ऐ भारत-माता! मेरा हृदय तेरी ओर उछलता है। प्यारे बच्चो! सूर्यानन्द को स्मरण करने में न भूलना।

तुम्हारे आधुनिक ऋषि (राम) का विद्यार्थी सदा सर्वदा तुम्हारा ध्यान रखता है। मृत्यु के इस शरीर से, गड़बड़ की इस नगरी (बेबीलन) से जाग कर हमें बाहिर आना चाहिये। जरामरण के अनुभव से धनवान होकर हमें अपने पिता के घर लौटने दो। "Let the dead past bury its dead". "मृतक अतीत को अपना मुर्दा तोपने दो।" मृतक वर्तमान को अपना मुर्दा गाड़ते रहने दो। जो वाणी हम में बोल रही है, उसकी हम सुनेंगे, और परमेश्वर के लिये झेंपेंगे नहीं। हम अपने आप को उसी एक नाम से पुकारेंगे, क्योंकि हमारा जन्म लिङ्गहीन ईश्वर से हुआ है और "मैं हूँ" में अभेद है।

तू ईश्वर परमात्मा का शब्द है और तू नित्य है। सारा जीवन अव्यक्त है।

"केवल वही प्राणी अनन्तता को जान सकते हैं जो व्यक्तित्व को देखना छोड़ चुके हैं।" संकीर्णचित्त लोग पूछते हैं, "क्या यह हमारी जाति का है? किन्तु द्विज (सत्य से उत्पन्न) लोग श्रेष्ठ स्वभाव के होते हैं। (उनको) सम्पूर्ण संसार केवल एक परिवार है" (गीता)।

प्रकाश और प्रेम एक हैं। तू स्वतः प्रकाश स्वरूप है।

"Hatred stirreth strife, but Love covereth all sins."

"द्वेष कलह को भड़काता है किन्तु
प्रेम सब पापों को ढक लेता है।"

मनुष्य का हृदय अपनी राह (पर चलना) चाहता है। किन्तु प्रभु उसके क़दमों को सञ्चालित करता है।

"स्मृति के काग़ज़ात, यद्यपि दुःखद परन्तु मधुर, अपना प्रभाव कभी नहीं खो सकते !"

प्यारे पूरन ! मेरी इच्छा है कि जिस २ लेख के प्रकाशन करने की तुम्हारी अभिलाशा हो, उस सब के छपवाने के लिये मैं इसी के साथ २ रुपया भेज सकूँ।

मैं भरोसा करती हूँ, प्यारे पूरन ! कि तुम इसका उत्तर देना स्थगित न करोगे, क्योंकि मुझे इसकी पहुँच की सूचना की ज़रूरत है।

तुम्हारी माता और तुम्हारी पत्नी को प्यार, और जो २ मुझे पूछें उन्हें कृपया मेरी ओर से भी पूँछ देना। बा० ज्योति स्वरूप से जब उत्तर मिला था तब से उन को मैं दो चिट्ठियां लिख चुकी हूँ। स्वामी शिवगणाचार्य का क्या हुआ ? कृपया सूचित कीजिये यदि अभी तक भी वे मथुरा में ही हों ? यदि प्रिय राम के परिजनों से तुम्हारी भेंट हो, या उन्हें प्रेम-सन्देश भेज सकते हो, तो ऐसा कर देना। तुम जानते हो कि सत्य, प्रेम, ज्ञान के साम्राज्य में हम एक हैं ! ॐ ! ॐ ! ॐ !

भवदीय- सदा सदा की माता।

पता—स्टेशन एम. लोस-एन्जलिस कैलीफोर्निया

सूर्यानन्द।

National Anthem.

(1)

God bless our ancient Hind,
Ancient Hind, once glorious Hind,
From Sagar Island to the Sind,
From Kashmir to Cape Comorin,
May perfect peace e'er reign therein.
God bless our peaceful Hind.

(2)

Let all her sons in Love unite
And make them do their duty aright.
Fill them with knowledge ever true
And let their virtue shine anew.

(3)

Your aid the Country doth implore,
Give her a hearing, oh, once more,
National spirit in her do pour,
Extend her fame from shore to shore
God bless once powerful Hind.

(4)

O Krishna of mighty deeds untold,
O Rama ever so brave and bold,
Forsake them not in evil days,
Unworthy though in many ways,
God bless our helpless Hind,

Rama's Lover

राष्ट्रीय गीत।

ईश्वर कल्याण करे हमारे प्राचीन हिन्द का,
प्राचीन हिन्द, एक समय के प्रतापी हिन्द, का।
सागर द्वीप से सिंध तक,
काश्मीर से कन्या कुमारी तक,
सदा पूर्ण शान्ति भारत में विराजे।
ईश्वर कल्याण करे हमारे शान्तिमय हिन्द का।

२

उसके सब बच्चे प्रेमसूत्र में गुन्द जायें।
और अपने कर्तव्य का पालन ठीक ठीक करें।
हे परमात्मा! नित्य सत्य ज्ञान से तू उन्हें परिपूर्ण कर।
और उनके सद्‌गुण फिर से चमकें।

३

तुम्हारी सहायता की प्रार्थना देश करता है,
ओह, एक वार हे प्रभु! उसकी फिर सुन लो,
राष्ट्रीय भाव उसमें भर दो,
उसकी कीर्ति द्वीप द्वीपों में फैला दो,
कभी के शक्तिशाली हिन्द का भगवान कल्याण करे।

४

अकथित शौर्य्यपूर्ण कार्यों के कर्त्ता, ऐ कृष्ण!
नित्य महावीर और साहसी ऐ राम!
बुरे दिनों में उनका साथ न छोड़ो,
यद्यपि वे अनेक प्रकार से अयोग्य हैं,
ईश्वर कल्याण करें हमारे निस्सहाय हिन्द का।

राम का प्रेमी।

स्वामी राम।

भारत के लिये स्वामी राम के प्रस्थान करने के अवसर पर होने वाली एक विधाई की सभा में नीचे लिखी कविता पढ़ी गई थी।

Like Golden Oriole' neath the pines
Rama chants to us his blessed lines
Rich freighted with the Orient's lore
He spreads it on our Western shore.
A bird of passage on the wing,
He brings a message from the King.
And this his clear resounding call
All, all for God, and God for all!
His message given, he flits afar
Like swiftly coursing meteor,
But leaves of heavenly fire a trace—
A new born love for all his race.
Adieu! Sweet Rama, thy radient smile,
A soul in Hades would beguile,
And though we may not meet again
Upon this changing earthly plane,
We know to thee all good must be
For thou'rt in God, and God in thee.

देव दारुओं के नीचे की सुनहली कोयल की तरह—
राम अपनी कल्याणकारी पंक्तियां हमें सुनाता है।
पूर्व के पांडित्य से खूब लदा हुआ

वह उसे हमारे पश्चिमी तट पर फैलाता है,
राहगीर उड़ती हुई चिड़िया (के समान)
वह बादशाह का सन्देश सुनाता है।
और उस की यह स्पष्ट गूंजती हुई पुकार !
"सब, सब परमेश्वर के लिये, और परमेश्वर सब के लिये !"
वह अपना सन्देश सुना चुका, अब वह द्रुतगामी उल्का की तरह दूर को उड़ता है,
किन्तु स्वर्गीय वह्नि का एक चिन्ह छोड़ जाता है—
अर्थात् अपनी सम्पूर्ण जाति के लिये एक नवजात प्रेम।
अन्तिम नमस्कार! मधुर राम! तेरी प्रभामयी मुसक्यान।
पाताल लोक की आत्मा को भी भटकाने वाली है,
और चाहे इस परिवर्तनशील भूलोक में फिर हम न मिलें,
पर हम जानते हैं सब भलाई तेरे ही लिये अवश्य है,
क्योंकि तू परमेश्वर में है और परमेश्वर तुझ में है।

ॐ ! ॐ ! ॐ !

POEMS.

MARCHING LIGHT.

1

No, no one can atone me.
Say, who could have injured,
And who could atone me?
No. no one can atone me.

2

The world turns aside.
To make room for me;
I come, Blazing Light!
And the shadows must flee.

3

I come, O you Ocean!
Divide up and part;
Or parched up and scorched up.
Be dried up, depart.

4

O. Mountains, beware!
Come not in my way;
Your ribs will be shattered.
And tattered to-day.

5

O Kings and Commanders!
my fanciful toys!

श्री ।

कविता ।

गमनशील प्रकाश ।

१.

कोई नहीं, कोई नहीं मुझे मना सकता ।
बताओ, कौन मुझे हानि पहुँचा सका,
और कौन मुझे मना सका ?
कोई नहीं, कोई नहीं मुझे मना सकता ।

२.

दुनिया एक तरफ पलट जाती है ।
मेरे लिये स्थान खाली करने को;
मैं धधकता हुआ प्रकाश आता हूँ, !
और छायाएँ भागने को बाध्य हैं ।

३.

मैं आता हूँ, ऐ तू सागर !
विभक्त हो जा और राह कर दे;
या भुन जा और झुलस जा,
सूख जा, चल दे ।

४.

ऐ भूधरो (पर्वतो !) सावधान !
मेरी राह में मत पड़ो ।
तुम्हारी पसलियां चकनाचूर हो जाँयगी ।
और टुकड़े २ उड़ जाँयगी आज ।

५.

ऐ बादशाहो और सेनापतियो !
मेरे मानसिक खिलौनो !

Here's a Deluge of fire.
Line clear! My boys!

6

Advisers and Counsellors!
Pray, waste not your breath.
Yes, take up my orders.
Devour up, ye, Death.

7

Go, howl on, O winds,
O my dogs! howl free.
Beat, beat, Storms!
O my Bugles! blow free.

8

I ride on the Tempests.
Astride on the Gale
My gun is the Lightning.
My shots never fail.

9

I chase as an huntsman,
I eat as I seize.
The hearts of the mountains.
The lands and the seas.

10

I hitch to my chariot.
The Fates and the Gods.

यह है अग्नि की दहिया,
राह साफ कर दो ! मेरे लड़को !

६.

मंत्रियों और उपदेशकों !
कृपा करके जुबान न लड़ाओ।
हां. मेरी आज्ञाएँ मानो।
मृत्यु, तुम भक्षण करो।

७.

ऐ पवनों ! जाओ, भौंको,
ऐ मेरे कुत्तो ! स्वच्छन्द भौंको।
चलो, चलो, तूफानो !
ऐ मेर बिगुलो ! स्वच्छन्द फूको।

८.

मैं तूफानों पर सवार होता हूँ,
तेज वात (आन्धी) पर चढ़ती लेता हूँ।
मेरी बन्दूक बिजली है,
मेरे निशान कभी नहीं चूकते।

९.

मैं शिकारी की तरह पीछा करता हूँ,
मैं पहाड़ों, भूमियों,
और सागर के हृदयों को।
पकड़ते ही खा लेता हूँ।

१०.

मैं अटका लेता हूँ अपने रथ में।
देवताओं और भाग्य देवियों को।

With Thunder of cannon.
Proclaim it abroad:

11

Shake! shake off Delusion.
Wake! wake up! Be free.
Liberty! Liberty!
Liberty! OM!

THE MOON.

The moonlight sleeps on the lawn of my garden,
The moon swings on the clouds, her cloak flaps on my garden.
The moonlight! O the moonlight! it shimmers, how it glimmers!
The breeze redolent with the light, while kissing how it lingers!
The moonlight floats on the boats of the wavelets.
As guided by zephyrs they guide on the lake.
The moon. Oh the moon! She perches on trees,
Casts shadows and lights that sway on the breeze.
The moon, Oh, she swims in the lake of the skies.
Come, catch me, you moonie; with me could you fly?
The moon, how she mingles with playmates, the stars!
She clasps them by fingers of light, and how dancing they are!

तोप की गरज से आप
इस की दूर देशों में घोषणा करो ;

११

झाड़ दो, झाड़ दो माया को ,
जागो, जाग पड़ो, स्वतंत्र हो जाओ,
वाह स्वाधीनता ! ओह स्वाधीनता !
ऐ स्वाधीनता ! ॐ !

चन्द्रमा ।

चांदनी मेरे बाग के उद्यान पर सोती है ।
चन्द्रमा मेघों पर झूलता है, उस का लवादा मेरे बाग पर फड़फड़ाता है ।
चांदनी ! ओ चांदनी ! कैसी झलझलाती है, कैसी झिलमिलाती है !
प्रकाश से सुगन्धित झकोरा, चूमते समय कैसा ठिठुकता है !
चांदनी उतराती हैं छोटी लहरों की नावों पर
मन्द झकोरों से सञ्चलित वे झील में राह दिखाती हैं ।
चन्द्रमा, अरे चन्द्रमा ! वह पेड़ों पर जा बैठता है,
और, उन पर छाया और प्रकाश डालता है जो पवन पर शासन करते हैं ।
चाँद, अरे, वह आकाशों की झील में तैरता है ।
आओ, मुझे पकड़ो, तुम चन्द्र ! मेरे साथ तुम उड़ सकते हो ?
चन्द्रमा, कैसा वह अपने साथी खिलाड़ी तारों से मिलता जुलता है !
प्रकाश की उँगलियों से वह उन्हें चिपटाता है, और कैसे वे नाचते हैं !

The moon, how she dived in the eyes of a boy.
He learnt all her secret and took her for toy.
Who lent you this beauty, O silver Ball?
My dream is her lustre and silver and all.

ON THE TOMB OF THE FREE.

1

"Come not to my grave with your mournings.
With your lamentations and tears.
With your sad forebodings and fears.
When my lips are dumb."
Do not thus come.

2

"Bring no long train of carriages,
No horse crowned with waving plumes.
Which the gaunt glory of death illumes,
But with hands on my breast.
Let me rest.

3

"Insult not my dust with your pity.
Ye who are left on the desolate shore.
Still to suffer and lose and deplore.
'Tis I should, as I do
Pity you.

चन्द्रमा, एक लड़के की आंखों में कैसे उस ने गोता मारा,
लड़के ने उस के सब भेद जान लिये और उसे खिलौना समझा।
ऐ चांदी के गेंद, किसने तुझे यह रूप उधार दिया ?
उस की झलक और चांदी और सब कुछ मेरा स्वप्न है।

ॐ !

मुक्त की क़ब्र पर।

१.

मेरी क़ब्र पर अपने शोकों को लेकर
अपने विलापों और आंसुओं को लेकर,
अपने भयों और दुःखद अनिष्ट दर्शनों को लेकर,
जब मेरे ओंठ गूंगे हैं,
तब इस तरह मत आओ।

२.

डब्बों की लम्बी गाड़ी न लाओ।
न लहराते पंखों वाला कोई घोड़ा लाओ,
जिसे मौत की क्षीण महिमा प्रकाशित करती है।
किन्तु अपनी छाती पर हाथ रक्खे
मुझे आराम करने दो।

३.

अपनी करुणा से मेरी धूल का तिरस्कार न करो,
तुम जो इस निर्जन तट पर छूट गये हो।
अपने दुःख भोगने और खो देने तथा रंज करने का,
यह तो मुझे करना चाहिये, जैसा कि मैं करता हूँ,
तुम पर करुणा।

4

"For me no more are the hardships.
The bitterness, heartaches and strife,
The sadness, and sorrows of life.
But the glory divine—
This is mine.

5

"Poor creatures! Afraid of the darkness,
who groan at the anguish to come.
How silent I go to my home!
Cease your sorrowful bell
I am well."

I KNOW THEE.

1

I know Thee, I know Thee, O Love.
You may shrink or shirk or shake my looks.
Thine heart is mine, I read it as a book.
I know Thee, I know Thee, O Love.

2

Dark vestures of scowls and frowns garments, O Bright.
These chimneys and globes cannot hide Thee, O Light.
I know Thee, I know Thee, O Love.

3

Sweet, sweet are Thy smiles.
Sweet wrinkles and threats!

४.

मेरे लिये अब कोई कठिनाइयां नहीं हैं,
कटुता, दिल में दर्द, और झगड़े,
जीवन की उदासियां और रंज,
किन्तु दैवी महिमा—
यह है मेरी।

५.

दीन प्राणियों! अन्धकार से भयभीत हुए,
जो आने की चिन्ता में कराहते हैं।
कैसा चुपचाप, मैं अपने घर जाता हूँ।
अपना शोकमय घंटा बन्द करो
मैं चंगा हूँ।"

मैं तुझे जानता हूँ।

(१)

मैं तुझे जानता हूँ, मैं तुझे जानता हूँ, ऐ प्यारे,
तुम मेरी नज़रों से चाहे बचो या टलो या लुको,
तेरा हृदय मेरा है, मैं उसे पोथी की तरह पढ़ता हूँ,
ऐ प्यारे! मैं तुझे जानता हूँ, मैं तुझे जानता हूँ।

(२)

भ्रूभंगों की काली पोशाकें और घुड़कियों के वस्त्र
ऐ प्रकाश! ये चिमनियां और ग्लोब तुझे छिपा नहीं सकते,
मैं तुझे जानता हूँ, मैं तुझे जानता हूँ, ऐ प्यारे!

(३)

मधुर, मधुर, हैं तेरी मुसक्याने,
मधुर (हैं) झुर्रियां और धमकियां!

'Tis the Ocean of Nectar that ripples and frets.
I know Thee, I know Thee! O Love.

4

Not to know Thee is misery.
To know Thee is bliss.
In stars, winds, and flowers I hug Thee and kiss.
I know Thee, I know Thee, O Love

LOVE'S CONSECRATION.

Take my life, and let it be consecrated, Lord, to Thee.
Take my heart and let it be full saturated, Love, with Thee.
Take my eyes and let them be intoxicated God, with Thee.
Take my hands and let them be engaged in sweating Truth for Thee.
Beautiful eyes are those that show beautiful thought that burn below.
Beautiful lips are those whose words
Leap from the heart like songs of birds.
Beautiful hands are those that do.
Work that is earnest, brave, and true.
Moment by moment the whole day through.
I was not born, nor grow, nor die.
Dumb nature through the body works.
It is the Ego sows and reaps.
Not I, the Self unchanging.

वह अमृत का सागर है, जिसमें तरंग और फेना उठता है,
मैं तुझे जानता हूँ, मैं तुझे जानता हूँ, ऐ प्यारे !

४.

तुझे न जानना विपत्ति है,
तुझे जानना परमानन्द है,
नक्षत्रों, पवनों, और फूलों में मैं तुझे गले लगाता और चूमता हूँ,
मैं तुझे जानता हूँ, मैं तुझे जानता हूँ, ऐ प्यारे !

प्रेम का उत्सर्ग (भेंट)

ऐ प्रभो ! मेरी जान ले लो और उसे आप के समर्पण हो जानेदो,
ऐ प्यारे ! तू मेरा हृदय ले ले और उसे अपने से बिलकुल भर जाने दे,
हे परमेश्वर ! तू मेरे नयन ले ले और उन्हें अपने से मतवाला हो जाने दे,
हे प्रभु ! मेरे हाथ ले ले और उन्हें तेरे लिये, सत्य विषय पसीना बहाने अर्थात् प्रयत्न में लग जाने दे
सुन्दर नेत्र वह हैं जो प्रकट करते हैं सुन्दर विचार को
जो कि नीचे दहकते हैं, अर्थात् निचले लोक जिनमें दहकते हैं।
सुन्दर अधर वह हैं जिनके शब्द
हृदय से उछलते हैं पक्षियों के गीतों की तरह।
सुन्दर हाथ वह हैं जो करते हैं
ऐसा काम कि जो उत्सुकतापूर्ण, वीर और सत्य है।
प्रति क्षण सारे दिन भर।
मैं न जन्मा था, न बढ़ा, न मरा।
गूंगी प्रकृति शरीर द्वारा कार्य करती है।
वह अहंकार है जो बोता और काटता है।
न कि मैं, (जो हूँ) निर्विकार आत्मा।

PEACE LIKE A RIVER FLOWS TO ME.

Peace like a river flows to me.
Peace as an ocean rolls in me.
Peace like the Ganges flows.
It flows from all my hair and toes.
O fetch me quick my wedding robes,
White robes of light, bright rays of gold.
Slips on, lo! once for all the veil to fling!
Flow, flow, O wreaths, flow fair and free.
Flow wreaths of tears of joy, flow free.
What glorious aureole, wonderous ring
O nectar of life! O magic wine
To fill my pores of body and mind!.
Come fish, come dogs come all who please,
Come powers of nature, bird and beast.
Drink deep my blood, my flesh do eat.
O come, partake of marriage feast.
I dance, I dance with glee.
In stars, in suns, in oceans free.
In moons and clouds, in winds I dance.
In will, emotions, mind I dance.
I sing, I sing, I am symphony.
I'm boundless ocean of Harmony.
The subject—which perceives.
The object—thing perceived.
As waves in me they double.
In me the world's a bubble.

शान्ति नदीवत् बहकर मुझमें आती है।

शान्ति नदी की तरह मेरी ओर बहती है,
शान्ति सागर की तरह मुझमें लहराती है,
शान्ति गंगा की तरह बहती है,
वह बहती है मेरे सब बालों और अंगूठों से,
अरे जल्दी ले आओ मेरे ब्याह के कपड़े,
प्रकाश के श्वेत वस्त्र, सोने की चमकीली किरणें,
ऐ लो! देखो! सदाके लिये घूँघट परे हटने को, फिसलता है।
बहो बहो, ऐ भालो! सुन्दर और स्वच्छन्द बहो,
हर्ष के आंसुओं के हारों! बहो, स्वच्छन्द बहो।
कैसा सुन्दर प्रभामंडल, अद्‌भुत छल्ला है।
ऐ जीवन के अमृत! ऐ जादू भरी शराब!
शरीर और चित्त के मेरे रोमकूपों को भरने को
आओ मछलियां, आओ कुत्तो, जिनकी इच्छा हो सब आओ,
आओ प्रकृति की शक्तियाँ, पंछी और पशु,
मेरा खून खूब पियो, मेरा मांस ज़रूर खाओ,
अरे आओ, इस ब्याहके भोजमें ज़रूर शामिल हो जाओ,
मैं नाचता हूँ मैं नाचता हूँ अति प्रसन्नता से
तारों में, सूर्यों में सागरों में स्वच्छन्द,
चाँदों और मेघों में, पवनों में मैं नाचता हूँ,
मैं गाता हूँ, मैं गाता हूँ, मैं स्वरसाम्य हूँ।
मैं स्वरैक्य का असीम सागर हूँ।
द्रष्टा—जो देखना है,
पदार्थ—जो वस्तु देखी जाती है,
लहरों की भांति वे मुझमें दूने हो जाते हैं,
मुझमें संसार एक बुदबुदा (बुलबुला) है।

BE CLAM.

"Why so pale and wan?
Prithee, why so pale?
Will, when looking well, can't move her.
Looking ill prevail?
Prithee, why so pale and wan?
Why so dull, and mute, young sinner?
Prithee, why so mute?
Will, when speaking well can't move her.
Saying nothing do it?
Prithee, why so mute ?
" Quit, quit for shame, this will not move,
This cannot take her ;
If of herself she cannot love
Nothing can make her,
The devil take her."

OM !

IT IS NOT RAINING RAIN TO ML.

It is not raining rain to me,
It is raining daffodils.
In every dimpled drop I see
Wild flowers on distant hills.
The clouds of gray engulf the day
And overwhelm the town.
It is not raining rain to me,
It is raining roses down.
It is not raining rain to me.

शान्त वा सावधान हो।

"इतने पीले और विवरण क्यों ?
मैं तुझसे विनती करता हूँ, इतने पीले क्यों ?
इच्छा, जब भलीचंगी दिखाई पड़ती है, उसे डिगा नहीं सकती,
तो क्या बुरी दिखने पर प्रभाव डालेगी ?
मैं तुझसे विनती करता हूँ, इतने पीले और विवरण क्यों ?
ऐ युवा अपराधी ! इतने जड और मूक क्यों ?
मैं तुझसे विनती करता हूं, इतने गूंगे क्यों ?
इच्छा, जब बोलतीचालती इच्छा उसे डिगा नहीं सकती,
तो क्या कुछ न बोलने वाली इच्छा उसे डिगा देगी ?
मैं तुझसे विनती करता हूँ, इतने गूँगे क्यों ?
छोड़ो छोड़ो लज्जित होकर, इच्छा उसे पिघला न सकेगी,
यह उसे नहीं ले सकती;
यदि अपने आपही वह प्रिया प्यार नहीं कर सकती
तो फिर किसी तरह उसे सम्मत नहीं किया जा सकता,
कि शैतान उसे ग्रहण करे।"

ॐ ! ॐ !! ॐ !!!

यह मुझ पर वर्षा नहीं हो रही है।

यह मुझ पर वर्षा नहीं हो रही है,
नरगिस के फूल बरस रहे हैं।
प्रत्येक पचके हुए बूँद में मैं देखता हूँ
जंगली पुष्प सुदूर पहाड़ियों पर
भूरे बादल दिन को घेरे हैं
और नगर को दबाये हैं।
यह मुझ पर पानी नहीं बरस रहा है
यह तो गुलाब बरस रहे हैं
यह मुझ पर वर्षा नहीं हो रही है।

But fields of clover bloom
Where any buccaneering bee
May find a bed and room.
A healthy unto the happy !
A fig for him who frets !
It is not raining rain to me,
It is raining violets.

BLOOD RELATIONS.

O!my direct blood relations,
Beat in arteries and in veins.
Plants in air, light and water,
All other relations are but chains
Bone of bone, my blood of blood
Are mountains, rivers, sun and rains.
Voilets, lilies, rivers, sun and raids.
My heart of heart their joy contains.
Oceans, winds. and earths are running
In me as in city lanes.
My Infinite, infinite Joy expresses
In heavenly music celestial strains,
The sparking drops of tears of stars
I shower forth in pouring rain.
The melodious song of the Ganges,
The music of the waving pines,
The echoes of the ocean's war,
The lowing of the kine.
The liquid drops of dew,

किन्तु घास के मैदान खिल रहे हैं
जहां कोई डाकू भौंरा
बिस्तर और कमरा पा सके।
सुखी के लिये सुखकर !
उसके लिये तिनका, जो भुंभला रहा है,
यह मुझ पर पानी नहीं बरस रहा है,
यह तो फूलों का वर्षा हो रहो है।

सगे संबंन्धी।

अरे मेरे सीधे एक खून के सम्बन्धी,
नसों और नाड़ियों में फड़कते हैं
पौधे, हवा, प्रकाश और पानी में
अन्य सब संबन्धी केवल बंधन हैं।
हड्डी की हड्डी, मेरे खून के खून
हैं पहाड़, नदियां, सूर्य और मेह।
फूल, कंवल फूल, हंसते और मुसक्याते हैं,
मेरे दिल के दिल में उनकी खुशी समाई है।
सागर, पवन और भूमियां मुझ में ऐसे दौड़ रही हैं
जैसे शहर मे गलियां।
मेरा अनन्त, अनन्त हर्ष प्रकट होता है।
स्वर्गीय संगीत में, दिव्य स्वरों में।
आंसुओं के तारों के चमकते बूँद
मैं गिरती वर्षा में बरसाता हूँ,
मधुर गीत गंगा का,
लहराते हुए देवदारुओं का संगीत,
सागर के संभ्रम की प्रतिध्वनियां,
गौओं का रँभाना, (बम्बाना)
ओस के तरल बूँद।

The heavy lowering cloud,
The patter of the tiny feet,
The laughter of the crowd,
The golden beam of the sun,
The twinkle of the silent star,
The shimmering light of the silvery moon.
Shedding lustre near and far,
The flash of the flaming sword,
The sparkle of jewels bright,
The gleam of the light-house beacon light,
In the dark and foggy night.
The apple bosomed earth and heaven's glorious wealth,
The soundless sound, the flameless light,
The darkless dark and wingless flight,
The mindless thought, the eyeless sight,
The mouthless talk, the handless grasp so tight,
Am I, am I, am I.

OM.

THE WORLD THE WORLD IS NAUGHT TO ME.

My self, the self is all to me,
The body, whither it goes what care I,
If toosed here and there or left to die.
I am Freedom's Self ; let the body as salt-sea spray
Be dashed hither and thither or up and away
Come on, ye pleasures, come on, ye pains,

भारी नीचे उतरते मेघ,
नन्हें चरण की थपथपाहट,
भौंड़ की हँसी,
सूर्य की सुनहली किरण,
मौन नक्षत्र की झपक,
रुपहले चाँद की झिलमिलाती चाँदनी,
दूर और निकट प्रकाश-प्रसारिणी,
लपलपाती तलवार की लपक (वा चमक)
उज्ज्वल रत्नों की दमक
प्रकाशगृह के संकेत-प्रकाश की प्रभा
अंधेरी और कोहरेवाली रात में,
सेव-गर्भवाली पृथिवी और वैकुंठ का विशिष्ट धन,
शब्दहीन शब्द, विना लू का प्रकाश
अन्धकार हीन तम और बेपँखों की उड़ान
चित्तरहित विचार, नेत्रहीन दृष्टि,
मुखहीन बातचीत, विना हाथ की अति दृढ़ पकड़,
सब मैं हूँ, मैं हूँ, मैं हूँ।

राम,

दुनिया, मेरे लिये दुनिया नहीं है।

मेरी आत्मा, यह आत्मा, मेरे लिये सब कुछ है।
देह, यह चाहे कहीं जाय, मुझे इसकी क्या परवाह?
यदि यहाँ और वहाँ उछली पुछली जाय, या मरने को छोड़ दी जाय,
मैं स्वाधीनता का आत्मा हूँ, शरीर क्षार समुद्र के फेन की तरह
चाहे इधर और उधर या ऊपर और दूर ठोकरें खाय!
ऐ सुखों! तुम आओ, ऐ दर्दों! तुम आओ,

To me ye are equal, the same, the same.
The Sun lights the gardens as well as the waste,
Alike I do light all changes of fate.
Vast ocean of heavens blue, pure and high,
Is ne'er affected, clouds rise and die.
Life or death and health or disease,
In me like vapours rise, play, and do cease.
The straight line of youth and the curves of age,
Are surface figures on me as a page.
Success or failure makes no difference to me,
For I am free, I am free, I am free.
All planets, suns and stars and skies,
Leaves far behind and higher flies
My twineless kite of Liberty free.
With full breast sing I songs of glee.
I am free, I am free, I am free.
The world, the world is naught to me.

RAMA.

GOOD BYE

The moon is up, they see the moon,
I drink Thine eyebrows light,
Big shows they hold full crowded, soon,
I watch and watch Thee, source of sight?
Nay, call no surgeons, doctors none,
For me my pain is all delight.

मुझे तुम समान हो, एक समान, एक समान,
सूर्य्य प्रकाश करता है बागों और वैसेही ऊसरों को,
भाग्य के सब परिवर्तन में एकसां प्रकाशित करता हूँ।
पवित्र और ऊँचे, नील आकाशों का विशाल सागर,
कभी प्रभावित नहीं होता, मेघ आते और नाश होते हैं।
जीवन या मृत्यु और स्वस्थता या बीमारी,
मुझ में भापों की तरह उठती, खेलती और मिटती हैं।
जवानी की सीधी लकीर और आयु (उम्र) के चक्कर,
मुझपर आकृतियों की तरह ऐसे हैं जैसे पन्नेपर लकीरें।
सफलता या असफलता से मेरे लिये कोई अन्तर
नहीं पड़ता,
क्योंकि मैं स्वतंत्र हूँ, मैं स्वतंत्र हूँ, मैं स्वतंत्र हूँ।
मेरी स्वाधीनता की विना डोर वाली स्वतंत्र पतंग।
सब ग्रहों, सूर्य्यों, नक्षत्रों और आकाशों को
बहुत पीछे छोड़ देती है, तथा और भी ऊँची उड़ती है।
पूरे कलेजे से मैं गाता हूँ आल्हाद के गीत,
मैं स्वतंत्र हूँ, मैं स्वतंत्र हुं, मैं स्वतंत्र हूं!
दुनिया, दुनिया मेरे लिये कुछ नहीं है।

राम! ॐ!!

नमस्कार (खुदा हाफ़िज़)

चन्द्रमा निकल आया है, वे चन्द्रमा देखते हैं,
तेरी आंखों की पलकों का प्रकाश मैं पीता हूँ,
बड़े तमाशे वे करते हैं जिनमें पूरी भीड़ होती है, शीघ्र
मैं ताकता और ताकता हूँ तुझे, जो दृष्टि का मूल है।
नहीं, किसी जर्राह को न बुलाओ, न किसी हकीम को,
क्योंकि मेरे लिये मेरी पीड़ा पूर्ण आनन्द है।

Adieu ! Ye citizens ! Cities, Good'bye !
O, welcome, dizzy, ethereal heights !
O, Fashion, custom, virtue, and vice.
O, Law, convention, peace and fight !
O, Friends and foes, relations, ties,
Possession, passion, wrong and right.
Good bye, O, time and space ; Good bye !
Good bye ! O, world and day and night.
My love is flowers, music, light,
My love is day, my love is night.
Disolved in me all dark and bright.
O, what a peace, peace and joy !
O, leave me alone, My love and I.
Good bye, Good bye, Good bye.

RAMA.

LOVE.

Dear little Violet, with Thy dewy eye,
Look up and tell me truely,
When no one is nigh,
What Thou art !
The Violet answered with a gentle sigh,
If that is to be told when alone,
Then I must sadly own,
You will never know what am I.
For my brothers and sisters are all around,
In the air and on the ground,
And they are the same as I.

नमस्कार ! ऐ नगरनिवासियों ! नगरो, नमस्कार !
अरे चकरानेवाली, आकाशी ऊँचाइयों ! स्वागत,
ऐ परिपाटी, प्रथा, नेकी और बदी !
ऐ क़ानून, नियम, शान्ति और संग्राम !
ऐ मित्रो और शत्रुओं, संबंधियों, बन्धनों,
अधिकार, विकार, गलत और सही !
नमस्कार, ऐ काल और देश, नमस्कार !
नमस्कार ! ऐ संसार और दिन तथा रात !
फूल, संगीत, प्रकाश मेरा प्रेम है।
मेरा प्रेम है दिन, मेरा प्रेम है रात्रि,
मुझ में लीन होगये सब अन्धकार और प्रकाश।
अरे कैसी शान्ति, शान्ति और खुशी है !
अरे मुझे अकेला छोड़ दो, मेरे प्यारे और मुझको।
नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार,

राम,

प्रेम।

प्यारे छोटे फूल, अपनी ओसीली आँख से
इधर देख और मुझ से सच २ कह दे,
जब कोई समीप नहीं है,
तब तू क्या है !
फूल ने कोमल आह से उत्तर दिया,
यदि अकेले में यह बताना है,
तो मुझे दुःख पूर्वक मंजूर करना पड़ेगा,
कि तुम कभी न जानोगे कि मैं क्या हूँ।
क्योंकि मेरे भाई और बहनें सब ओर हैं
हवा में और धरती पर,
और वे वही हैं जो मैं हूं।

O, Joy ! O, Joy ! O, Joy !
The playful breeze am I,
How gently Thy cheeks I stroke,
As my fragrant breath passes by,
Carrying messages of love,
Confidence, peace and cheer,
And sweetly taking away all anxiety,
All anxiety, worry and fear,
O, Joy ! O, Joy ! O, Joy !
The little black ant am I,
Moving so silently and swiftly.
And noiselessly passing by
In a world in which it is not concerned.
And bothering too about things to be earned,
But working without a murmur or sigh,
No thought of reward or position high.
O, Joy ! O, Joy ! O, Joy !
The sparkling dew am I,
I kiss and lick the flower's lips.
Sweet children of my sun,
Violets, Roses, Tulips, Lilies,
Jessamine, Poppies, Daisies, and Pinks,
Grass, Leaves and Seeds I nurse and feed,
Their Father left, the little ones rest.
From air high to them I descend.
And to suckle bend,
They sleep and slip breast's liquid tips,

वाह रे आनन्द ! वाह रे आनन्द ! वाह रे आनन्द !
खिलंदड़ी वायु मैं हूँ,
किस कोमलता से तेरे गाल मैं पीटता हूँ,
जब मेरी सुगन्धित सांस पास से निकलती है,
संदेश लिये हुए प्रेम का,
विश्वास शान्ति और हर्ष का,
और मधुरता से सारी चिन्ता
सम्पूर्ण चिन्ता, आकुलता और भय हरती हुई, (निकलती है)
वाह रे आनन्द ! वाह रे आनन्द ! वाह रे आनन्द !
छोटी काली चींटी मैं हूँ,
जो चलती है इतने चुपके और तेज़ी से,
और विना शब्द किये पास से निकलती हुई
उस संसार में जिससे उसका कोई प्रयोजन नहीं है,
और जो वस्तुएं उपार्जन करने की हैं उनके लिये परेशान भी होती हुई,
किन्तु विना गड़बड़ाहट या आहके काम करती निकलती है।
वाह रे आनन्द ! वाह रे आनन्द ! वाह रे आनन्द !
जगमगाती ओस मैं हूँ, (इस रूप से)
मैं फूलों के ओंठ चूमता और चाटता हूँ।
मेरे सूर्य के मधुर बच्चे,
गुलाब, नरगिस, बेला, कंवल (जुही)
चमेली, मोतिया, चम्पा, चाँदनी,
घास, पत्तियां और बीज मैं पालता और पोषता हूँ,
उनका जनक छूट गया है, शिशु आराम करते हैं,
ऊँची हवा से मैं उनके पास उतरता हूँ,
और दूध पिलाने को झुकता हूँ,
वे सोते हैं और पीने के तरल सिरे चूसते हैं।

There comes the sun, my Lover,
The children smile and open their eyes.
And just when I discover,
I melt in joyful sighs,
Oh, I am the Love! I am the Lover!
Oh, I'm the Lover, I am the Lover!

GOOD DAY.

Lound outries and wounds which once would hurt and smart,
Now sound so sweet like hymns of praise and music's pilmy art.
O, thief, O, slanderer, robber dear
Look sharp, come, Welcome, quick, O, don't you fear.
My self is thine, thine is mine,
Yes, if you don't mind
Please take away these things you think are mine.
Yes, if you think it fit;
Kill this body at one blow
Or slay it bit by bit;
Take off the body and all you may,
Be off with name and fame, away,
Take off, away!
Yet if you look just turning round
'Tis I alone, am safe and sound,
Good day, O, dear, Good day!

वह आता है सूर्य, मेरा प्यारा
बच्चे मुसक्याते और अपनी आंखें खोलते हैं,
और जब मैं पता पाता हूँ
मैं हर्षभरी आहों में पिघल जाता हूँ
अरे, मैं हूँ प्रेम ! मैं हूँ प्रेमी !
अरे, मैं हूँ प्रेमी, मैं हूँ प्रेमी !

प्रणाम ।

ज़ोर के विलाप और घाव जो किसी समय व्यथा और पीड़ा देते थे,
अब स्तुतियों और तालावृत संगीत कला के समान बड़े मधुर लगते हैं।

ऐ चोर, ऐ निन्दक, डाकू प्यारे !
जल्दी करो, आओ, स्वागत, जल्दी,अरे तुम डरो मत, प्यारे !
मेरा आत्मा तेरा है, तेरा मेरा है,
हां यदि तुम्हारा जी चाहे तो
कृपया ये चीज़ें ले जाओ जो तुम मेरी समझते हो।
हां यदि तुम यही उचित समझते हो,
तो इस देह को एक चोट से मार डालो
या इसे टुकड़े टुकड़े काट डालो
देह और जो कुछ तुम उतार ले सकते हो सब उतार ले जाओ
भाग जाओ नाम और यश लेकर, भागो,
दूर ले जाओ !
तथापि यदि तुम तनिक पलट कर देखो
तो यहां केवल मैं ही हूँ जो सुरक्षित और सुस्वस्थ है
प्रणाम, ऐ प्यारे, प्रणाम !

LIKENESS OF MY BELOVED.

1.

Oh ! how could I get my Love's likeness !
Could anything like Him be conceived !
Could He in cameras be received !
Could Artist stand to take His picture ?
Could He appear in colour and figure ?
The camera of form did melt away !
His flood of light was too much, too much,
O, how could I get my Love's likeness.

2.

I focussed the mind to take His portrait,
Adjusted the eyes, to take His portrait,
The camera of heart to take His portrait,
The apparatus all did melt away ;
His flood of light was too much, too much.
O, how could I get my Love's likeness ;
Then I'll have him as I could not have likeness.

3.

COVERING.

They say the Sun is but His photo,
They say that man is in His image,
They say He twinkles in the stars,
They say He smiles in fragrant flowers,
They say He signs in nightingales,
They say He breathes in cosmic air,

मेरे प्यारे की तसवीर।

१.

अरे! अपने प्यारे का प्रतिरूप मैं कैसे पा सकता हूँ?
उसके सदृश किसी चीज़ की क्या धारणा की जा सकती है!
क्या वह तसवीर खींचने के यंत्र में भरा जा सकता है!
क्या चित्रकार उसकी तसवीर खींचनेको खड़ा होसकता है?
क्या वह रंग और आकार में प्रकट हो सकता है?
ओह, आकार का यन्त्र पिघल गया!
उसके तेज की बढ़िया अति अधिक थी अति अधिक थी,
अरे! अपने प्यारे का प्रतिरूप मैं कैसे पासकता हूँ?

२.

मैं ने चित्त को एकाग्र किया उसकी तसवीर लेने को,
नेत्रों को यथास्थान किया उसकी तसवीर लेने को,
हृदय का केमेरा (यंत्र खड़ा किया) उसकी तसवीर लेने को
सम्पूर्ण यंत्र (किन्तु) गल गया;
उसके तेज की बढ़िया अति अधिक थी अति अधिक थी।
अरे अपने प्यारे का प्रतिरूप मैं कैसे पासकता हूँ?
तब मैं उसी को लूंगा क्योंकि मुझे प्रतिरूप नहीं मिल सका,

३.

आवरण

लोग कहते हैं कि सूर्य उसी की प्रतिमा है,
लोग कहते हैं कि मनुष्य उसी का प्रतिरूप है,
लोग कहते हैं कि वह तारों में झलकता है,
लोग कहते हैं वह सुगन्धित फूलों में मुसक्याता है,
लोग कहते हैं वह कोकिलों में गाता है
लोग कहते हैं वह विश्व-पवन में सांस लेता है

They see He weeps in raining clouds,
They say He sleeps in winter nights,
They say He runs in prattling streams,
They say He swings in rainbow arches.
In floods of light, they say, He marches.

4.

SOLICITING.

Yea, yea, 'tis so
These forms of space and time,
Are garments fine and covers rich, which half reveal,
And half conceal that glorious love of mine.
My darling dear! Why veils and screens?
Are you ugly? Are you proud or shy?
Are you hurt by open appearance?
Why covers and curtains, why?
Pray, strip Thee naked do,
I pray Thee, do, I pray,
I'll have no Nay,
To-day.

ANSWER

His answer flashed as lightning in my heart;
No, neither vanity, nor shame,
Taints me, no kind of blame!
Do you wish me to bare my Self glorious, rare?
Are you candid, sincere,

लोग कहते हैं वह बरसते मेघों में रोता है,
लोग कहते हैं वह जाड़े की रातों में सोता है,
लोग कहते हैं वह बकझक करती नदियों में दौड़ता है,
लोग कहते हैं वह इन्द्रधनुष की मेहरावों में झूलता है,
लोग कहते हैं प्रकाश की वह्रियाओंमें वह चलता है।

४.

विनय ।

हां, हां, ऐसा ही है
देश और काल के ये रूप।
हैं वस्त्र अति उत्तम और मूल्यवान आवरण,जो आधा खोलते
और आधा ढकते हैं मेरे उस प्रतापी प्यारे को।
मेरे प्रिय प्यारे ! क्यों ये घूंघट और पर्दे ?
क्या तुम कुरूप हो ? क्या तुम अभिमानी या झेपू हो ?
खुले आम निकलने से क्या तुम्हें चोट लगती है ?
क्यों ये ओढ़ने और पर्दे, क्यों ?
कृपया, अपने को बिलकुल विवस्त्र (नंगा) करलो।
मैं तुझ से विनती करता हूँ, कर लो, मेरी विनय है,
मैं 'नहीं' (नन्ना) स्वीकार न करूंगा
आज,

उत्तर ।

उसका उत्तर बिजली की तरह मेरे हृदय में कौंध गया;
नहीं, न अभिमान, न लज्जा,
मुझे किसी प्रकार का दोष वा उपालम्ब कलंकित नहीं करता !
क्या तुम मुझसे चाहते हो कि मैं अपना तेजस्वी आत्मा, जो
विरल है, उघार दूं ?
क्या तुम सच्चे शुद्धान्तःकरण हो,

Then, why don't you, Dear,
Take off all Thy clothes,
And Thyself do disclose ?
Tear, tear out the blinds,
Don't you hide behind,
No curtain, partition,
Name, fame or position.
Body, mind or possession,
Loves, hatreds and passion,
Claims, clingings, designs,
All "mine and thine" renounce, resign.
Tear, tear out the blinds,
Yourself don't conceal,
Burn, burn off the seal,
Rend asunder the veil.
Come hail, all hail !
Please don't you delay,
I say,

To clasp Me, strip Thou naked bare,
And lo ! 'tis Thou art me so fair,
So fair !

Delightful ! delicious ! how lovely and sweet !
His covers I find my covers and sheets.
His blankets and quilts my blankets and quilts.
Lo ! Off go the blankets !
Off covers and quilts.

तो फिर क्यों नहीं तुम प्यारे !
अपने सब कपड़े उतार डालते,
और अपने आपको प्रकट कर देते ?
फाड़ डालो, फाड़ डालो, परदों को,
पीछे तुम न छिपो,
न है कोई पर्दा, टट्टी,
नाम, ख्याति या स्थिति।
देह, मन या अधिकार,
राग, द्वेष और मनोविकार
दावे, अनुरक्तियां, मनसूबे,
सब "मेरा और तेरा" त्याग दो, दूर करदो,
फाड़ डालो, फाड़ डालो पर्दों को,
अपने आपको मत छिपाओ,
जला दो, जला दो मोहर को
नक़ाब को फाड़ डालो।
आओ स्वागत, पूर्ण स्वागत !
कृपया तुम देर न करो,
मैं कहता हूँ,
मुझे चिपटने को, तू बिलकुल नग्न होजा,
और फिर देखो ! यह तू ही है मैं इतना सुन्दर,
इतना सुन्दर !
सुखद मनोहर, कितना प्रिय और मधुर !
उसके ओढ़ने तो मैं अपने ओढ़ने और चादरें पाता हूँ,
उसके कम्बल और रजाई मेरे कम्बल और रजाई हैं।
देखो, वह गये कम्बल,
दूर (गये) ओढ़ने और रजाई

He is I, I He.
No He, She, Me, or Thee.

OM! Om!

IN ME.

The oceans surge, the rivers roll
  In me, in me, in me.
The flowers smile, the zephyrs blow
  In me, in me, in me.
Big fairs are held and battles raged,
  In me, in me, in me.
The mountains heave and Nature blooms
  In me, in me, in me.
The comets fly, the meteors die,
Cold winds sigh and thunders cry,
  In me, in me, in me.
The foe contends, the friend defends,
The mother sleeps, the baby weeps,
  In me, in me, in me.

THE WORLD I SAW, STUDIED, AND LEARNT.

This primer well did me describe,
Its letters were hieroglyphic toys,
In different ways did me inscribe,
This alphabet so curious one day,
I relegate to the waste-paper basket.
I burn this booklet leaf by leaf.

वह है मैं, मैं वह हूं.
न कोई नर, नारी, मैं या तू।

ॐ ! ॐ

मुझ में

सागर लहराते हैं, नदियां लुढ़कती हैं
मुझमें, मुझमें, मुझ में ।
फूल मुसक्याते हैं, पवनें चलती हैं
मुझमें, मुझमें, मुझमें ।
बड़े मेले लगते हैं और संग्राम होते हैं
मुझमें, मुझमें, मुझमें ।
भूधर (पर्वत) उभरते हैं और प्रकृति खिलती है
मुझमें, मुझमें, मुझमें।
धूमकेतु उड़ते हैं, उलका निपात होते हैं,
शीतल हवाएं आह भरती हैं और मेघनाद चीखता है,
मुझमें, मुझमें, मुझमें ।
शत्रु झगड़ता है, मित्र रक्षा करता है
माता सोती है, शिशु रोता है
मुझमें, मझमें, मुझमें ।

दुनिया मैं ने देखी, समझी और सीखी ।

इस वर्ण-प्रकाशिका ने मेरा अच्छा वर्णन किया,
इसके अन्दर चित्रशब्द खिलौने थे,
विभिन्न प्रकारों से इसने मुझे अंकित किया,
यह वर्णमाला जो एक दिन बहुत अद्भुत थी,
मैं रद्दी की टोकरी के हवाले करता हूँ,
मैं इस पुस्तिका को पन्ने पन्ने करके जलाता हूँ,

To light my lonely smoking pipe.
I smoke and blow it through my mouth,
And watch as curly smoke go out.

RAMA
So-am-I.

TO TRUTH.

O Love! O Love! O Love!
Above time, space and causality,
Thee I will always love.
O Truth, the one Reality.
O Love! O Dove! O Love!
My Self in which I live,
In Thee I live and move,
And to Thee myself I give.
O Love! O Love! O Love!
To Thee belongs my whole life,
Thee I will ever serve,
In the midst of honour or strife.
O Love! O Love! O Love!
Thy will is wholly mine,
Just bid me do whatever Thou wilt,
My will is a reflection of Thine.

IMMORTAL ETERNITY.

Before ever land was,
Before ever the sea,
Or the soft hair of the grass,

अपना अकेला हुक्का सुलगाने के लिये।
मैं अपने मुख द्वारा इसे पीता और फूकता हूँ,
और चक्करदार धुएँ को बाहर निकलते देखता हूँ।

राम स्वामी।

सत्य के प्रति

ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम !
देश, काल और वस्तु से परे,
तुझे मैं सदा प्यार करूँगा,
ऐ सत्य, एक मात्र तत्व !
ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम !
मेरा आत्मा जिसमें मैं रहता हूँ,
तुझमें मैं रहता और चलता फिरता हूँ,
और तुझ अपने आप को मैं देता हूँ।
ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम !
तेरा है मेरा समग्र जीवन,
तेरी मैं सदा सेवा करूँगा,
सम्मान या संग्राम के बीच।
ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम ! ऐ प्रेम !
तेरी मर्ज़ी पूर्णतया मेरी है,
जो तेरी इच्छा हो वह करने की तू मुझे आज्ञा दे।
मेरी मर्ज़ी तेरी मर्ज़ी की एक प्रतिच्छाया है।

अमर नित्यता (वा अनन्त काल)

भूमि की उत्पत्ति से पूर्व,
समुद्र से भी पूर्व,
अथवा घास के कोमल बालों,

Or the fair limbs of the trees,
Or the tresh-coloured fruit of my branches,
I was, and thy soul was in me.
First life on my sources.
First drifted and swam ;
Out of me or the forces,
That save it or damn.
Out of me man and woman, and wild beast and bird.
Bofoie God was, I am.
I the mark that is missed,
And the arrows that miss,
I the mouth that is kissed,
And the breath in the kiss,
The search and the sought and the seeker, the soul,
And the body that is.
I that saw where ye trod,
The dim paths of the night,
Set the shadow called God,
In your skies to give light,
But the morning of knowledge to rise,
And the shadowless soul is in sight.
The storm winds of ages,
Blow through me and cease,
The war-wind that rages,
The spring-wind of peace,

था पेड़ के स्वच्छ अंगों,
अथवा मेरी डालियों के ताज़े रंगीन फलों (से पूर्व),
मैं था और तेरी आत्मा मुझ में थी।
प्रथम जीवन मेरे उद्गमस्थानों पर
पहले बहा और तेरा,
मुझ से निकल कर, या शक्तियों से
जो उसे बचाती या नष्ट करती हैं।
मुझ से पैदा हुए नर और नारी, तथा वनैले पशु और पक्षी,
परमेश्वर के अस्तित्त्व के पहले "मैं हूँ" था।
मैं वह लक्ष्य (हूँ) जो बच जाता है,
और वह वाण जो चूक जाते हैं,
मैं वह मुख हूँ जो चूमा जाता है
और चुम्बन में सांस मैं हूँ।
खोज और जिसे खोजा जाता है और खोजनेवाला,
आत्मा, और देह जो है (यह सब मैं हूँ)।
मैं हूँ देखनेवाला जहां तुम चलते हो
रात्रि के धुंधले मार्ग।
यह छाया जिस का नाम ईश्वर है मैं ने स्थापित की,
तुम्हारे आकाशों में प्रकाश देने को।
किन्तु ज्ञान की प्रातःकाल उठने को,
फिर छायाहीन आत्मा दृष्टिगत होता है।
युगों की तूफानी हवाएँ
मेरे द्वारा चलती और बन्द होती हैं,
समर-वायु जो प्रचंडता से चलती है,
शान्ति की वसन्त-पवन,

Ere the breath of them roughen my tresses,
Ere eve of my blossoms increase.
All forms of all faces.
All works of all hands,
In unsearchable places,
Of time-stricken lands,
And death and all life.
And all reigns and all ruins,
Drop through me as sands,
O, my sons, O, too dutiful.
Towards God not of me,
Was not I enough beautiful,
Was it hard to be free ?
For, behold, I am with you and in you and of you,
Look forth now and see.

THE SECRET OF SUCCESS.

Come hither, come hither, ye merry bird,
And tell me a story do.
Why are you always happy and glad,
And never a thought of sorrow have ?
The bird cooed softly and whispered low,
The reason is very plain you know.
I love the sunshine, the gay green trees;
The whole of nature, the cool, cool breeze,
So why should I be sorry and pout,

पेश्तर इसके कि उनकी सांसें मेरी काकुलों को कड़ी होने दें,
पेश्तर इसके कि मेरी कलियों की बाढ़ की सांझ हो,
सब चेहरों के सारे रूप
सब हाथों के समस्त काम
ढूंढने के अयोग्य स्थानों में
समय की मारी हुई भूमियों के
सम्पूर्ण मृत्यु और सम्पूर्ण जीवन,
और सब राज्य तथा सब वर्षादियाँ,
मेरे द्वारा गिरती (टपकती) हैं जैसे बालू।
ऐ मेरे लड़को, ऐ अत्यन्त कर्तव्य परायण,
परमेश्वर के प्रति, न कि मेरे प्रति।
क्या मैं यथेष्ट सुन्दर नहीं था,
क्या स्वाधीन होना कठिन था ?
क्योंकि, देखो, मैं तुम्हारे साथ हूँ, और तुम में हूँ, तथा तुम्हारा हूँ,
अब दृष्टि दौड़ाओ और देखो।

सफलता की कुंजी।

यहां आओ, यहां आओ, ऐ प्रसन्न पक्षी !
और मुझ से यह कथा कहो।
कि क्यों तुम सदा खुशी और सुखी रहते हो,
और कभी तुम्हें रंज नहीं होता ?
पक्षी मधुरता से गुटका और धीरे से बोला,
कारण बहुत सादा है, तुम जानते हो।
मैं सूर्य-प्रभा को प्यार करता हूँ, खुश हरे पेड़ों को,
सम्पूर्ण प्रकृति को, ठंढी ठंढी पवन को (प्यार करता हूँ),
इस लिये मैं क्यों उदास रहूँ और मुँह लटकाऊं,

When Nature is laughing around and about ?
And is ready and willing to truly serve me,
With everything that is necessary,
If only I merrily sing and chirp,
And happily, happily to my work,
For, Nature and I are one, you see,
And she is always subservient to me.

FRAGMENTS OF LIGHT.

I heard a knock, a hard blow,
At my gate, and cried I, "Who is it ? Ho."
I wondering, waited, entranced, and Lo !
How soft and sweet Love whispered low,
"Tis Thou that knockest, do you not know ?"
My sweetheart dear,
Come near and near,
Smiling, glancing,
Singing, and dancing,
I bowed, with sighs.
He didn't reply.
I prayed and knelt.
He left and went.
"Why cut me so ?
Pray, stay ; don't go."
He answered slow,
"No, no."
I entreated hard,

जब कि प्रकृति इर्द गिर्द और निकट हँस रही है ?
और तैयार तथा राज़ी है सच्चाई से मेरी सेवा करने को,
हरेक वस्तु से जिसकी कि आवश्यकता है,
यदि केवल मैं मौज से गाता और चहचहाता हूँ,
और खुशी खुशी से अपने काम में लगा हूँ, तो इस लिये।
क्यों कि प्रकृति और मैं एक हूँ, तुम देखते हो,
और वह सदा मेरी चेरी बनी रहती है।

प्रकाश के खण्ड।

मैंने सुनी एक ठोकर, कड़ी चोट,
अपने फाटक पर, और मैं चीखा "कौन है"?
मैं आश्चर्य हुआ राह देखने लगा, यह देखो,
वह कैसा मधुर और धीमा प्यारा बहुत धीरे से बोला
"तू ही तो खटखटाता है, क्या तुझे मालूम नहीं?"
मेरे माशूक़ प्यारे!
निकट और निकट आ,
मुसक्याते, कटाक्ष करते,
गाते, और नाचते।
आहों से मैं झुका अर्थात् प्रणाम किया,
उस ने कोई उत्तर नहीं दिया
मैं ने प्रार्थना और दण्डवत की
वह चल दिया और चला गया
"क्यों मुझे इस तरह (पृथक करते) काटते हो?
कृपया ठहरो, न जाओ,"।
उस ने धीरे से जवाब दिया,
"नहीं, नहीं"।
मैं ने बड़ी विनती की,

" Pray, sit by me, Lord,"
He answered :
" Wouldst Thou sit by me ?
Then do, please, sit by Thee."
I : " Do unto me speak."
He : " Enter Thou into silence deep."
I : " I would clasp Thee and kiss ;
Dear, grant me but this."
He :—" Thou shalt clasp thyself and kiss ?
I am one with Thee, why miss ?
" My form Divine,
Is an image of Thine.
Why seek Thee form,
O, Source of charm ?
With Thee I lie,
You, outward fly,
Don't slight me so.
Why outward go ?"
A fine companionship I know,
In all I see and hear,
My Mistress is the buxom wind,
I taste the breath of showers.
To me the whispering leaves are kind,
And sweet the lips of flowers.
I find a welcome in the skies,
Another in the grass,

"दया करके मेरे पास बैठो, प्रभु!"
उस ने उत्तर दिया;
"क्या तू मेरे पास बैठेगा ?
तब कृपा करके जा अपने पास बैठ"।
मैंः-"मुझ से बोलो"।
वहः-"प्रवेश कर तू गंभीर मौनता में"।
मैंः-"मैं तुझे चिपटाऊं और चूमूँगा;
प्यारे, मेरी यह अर्ज़ मानो"।
"तुझे अपने आप को चिपटाना और चूमना होगा,"
हम और तुम तो एक हैं, क्यों चूकते हो ?
मेरा दिव्य रूप
तेरा एक प्रति रूप है
क्यों तू रूप ढूँढ़ता है
ऐ मोहनी के मूल ?
तेरे साथ मैं लेटता हूँ
तुम बाहर की तरफ भागते हो,
मेरा इतना तिरस्कार न करो।
क्यों तुम बाहर की तरफ जाते हो ?
अत्युत्तम संग मैं जानता हूँ
सब में जो मैं देखता और सुनता हूँ।
मेरी कान्ता (प्रिया) रंगीली हवा है,
मैं स्वाद लेता हूँ छींटों की सांस का।
फुसफुसाती पत्तियां मुझ पर कृपालु हैं,
और फूलों के ओठ मधुर हैं,
मेरा एक स्वागत आकाश में होता है
दूसरा घास में।

WIRELESS FLASHES.

QUESTION,

The great earth shall be thy cradle,
Rocking, rocking, day by day.
Star bespangled curtain spread,
Every night above thy head.
Suns on suns shall gild thy brow,
Baby, baby, what art thou ?

ANSWER.

Sing song, all day long,
Croonie ? Croonie ? Smile along,
Joy and laughter, laughter, laughter,
Innocence Strong,
Love took up and harp of life,
And smote all the chords with might,
Smote the chord of self, which trembling passed,
In music out of sight.

RAMA.

OM ! OM ! OM ! OM !

वेतार की कौंधें।

प्रश्न

महान् पृथिवी तेरा पालना होगी,
दिन प्रति दिन झूलता हुआ,
तारों से भूषित पर्दा फैला
हर रात को तेरे सिर पर (होगा),
सूर्यों पर सूर्य तेरी भौंह पर मुलम्मा करेंगे,
(और कहेंगे कि) बच्चे, बच्चे, तू कौन है ?

उत्तर।

सारा दिन पड़े गाओ,
झूनी ? झूनी ? मुसकुराते रहो।
प्रसन्नता और हँसी, हँसी हँसी,
प्रबल सरलता
प्रेम ने जीवन का बाजा उठा लिया।
और सब तारों को ज़ोर से बजाया
चित्त की तार को बजाया, जो थरथराता हुआ
दृष्टि से परे संगति में लीन होगया।

राम.

अमरीका के प्रसिद्ध योगी रामाचारक

की

योग सम्बन्धी अत्युत्तम और उपयोगी अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद (जो ठाकुर प्रसिद्ध नारायण द्वारा अनुवादित और प्रकाशित है, और लीग के दफतर में अभी विक्री अर्थ आया है)

नाम ग्रन्थ	मूल्य
(१) श्वास विज्ञान (अर्थात् प्राणायाम)	॥)
(२) हठयोग अर्थात् शारीरिक कल्याण	१॥)
(३) योगशास्त्रान्तर्गत धर्म्म	॥)
(४) योगत्रयी (कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्ति योग)	॥)
(५) राजयोग अर्थात् मानसिक विकास	१॥)
(६) योग की कुछ विभूतियाँ	॥)

स्वयं ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह कृत ग्रन्थ

(७) संसार-रहस्य अथवा अधः पतन	२॥)
(८) सीधे पण्डित (एक दार्शनिक उपन्यास)	१॥)
(९) जीवन-मरण-रहस्य	I=)
(१०) कृषि सिद्धान्त	=)

मैनेजर,
श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ.